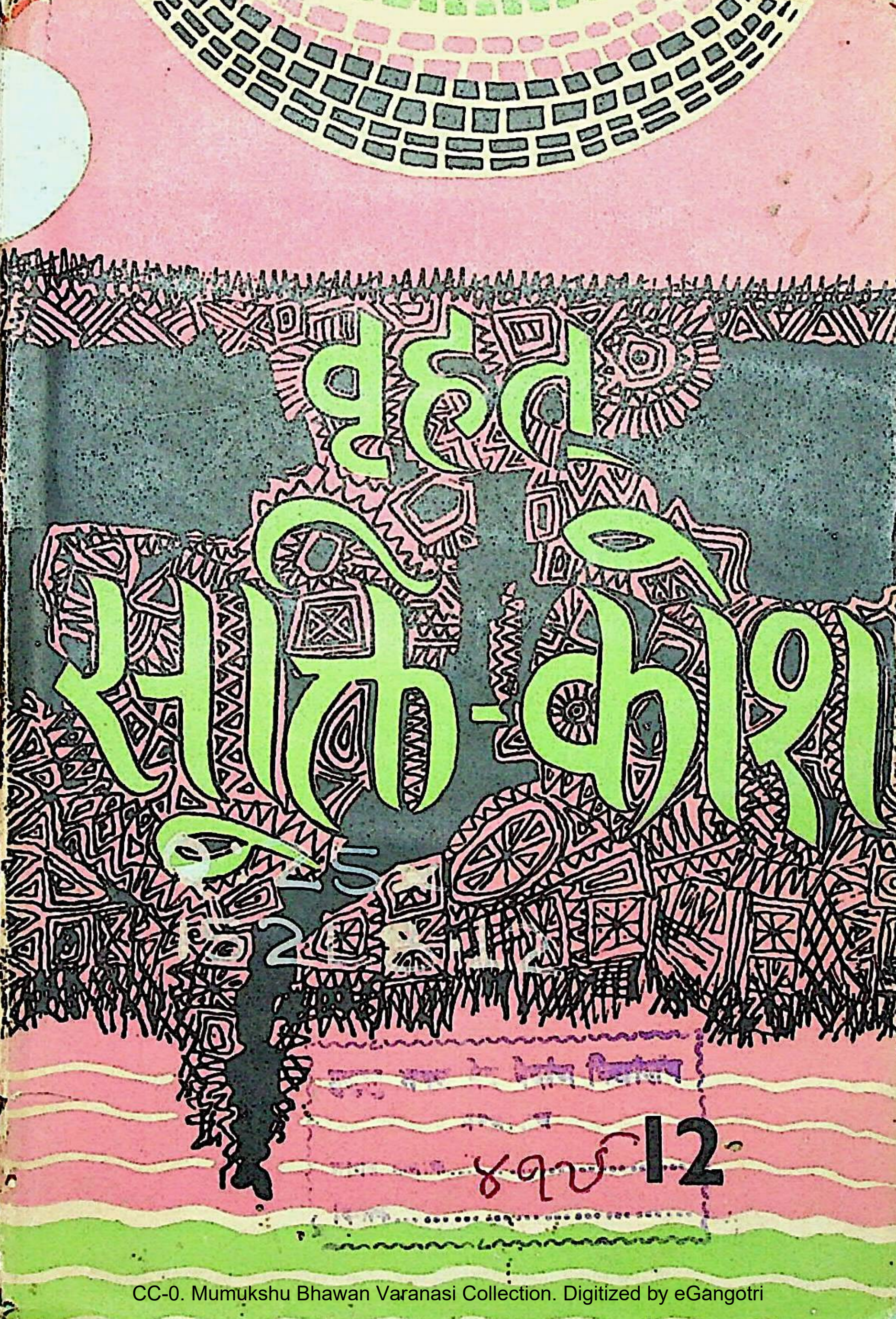

बृहद्
सूक्ति-कोश
12

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

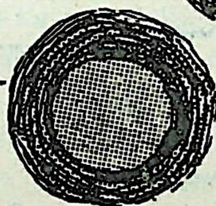
सूक्तियों में नीति के वचन थोड़े शब्दों में गागर में सागर की भाँति बड़ी सुन्दरता से व्यक्त होते हैं। इनमें उपदेश देने की छटा निराली होती है। ये भावों को सजा-संवार कर सजीव बनाने एवं वक्तव्य कला को चमकाने में बड़ी सहायक होती हैं।

—डॉ॰ हजारीप्रसाद द्विवेदी

प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-६

खण्ड बारह

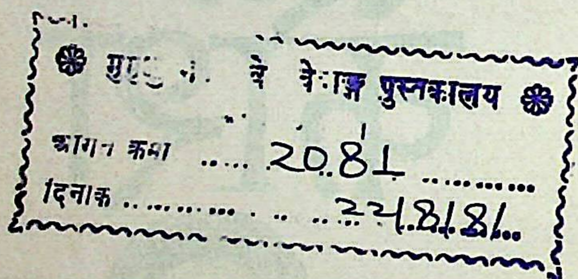
वृहत् सूक्ति कोश



विश्व के लब्ध-प्रतिष्ठ मनीषियों
की विशिष्ट सूक्तियों का संदर्भ-ग्रन्थ

सम्पादक

शरण



प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन
२०५, चावड़ी बाजार, दिल्ली
सम्पादक : शरण
संस्करण : १९७८
सर्वाधिकार : प्रकाशकाधीन
खण्ड : द्वादश
मूल्य : दस रुपये
मुद्रक : नटराज ऑफ़सेट प्रिंटर्स, सीताराम बाजार, दिल्ली-6

VRIHAT SOOKTI KOSH : SHARAN : PART XII
(A Book of Quotations) Rs 10/-

आमुख

सूक्तियाँ विश्व साहित्याकाश के दैदोप्यमान उज्ज्वल नक्षत्र ही नहीं अपितु मानव के अन्तराल में व्याप्त उल्लास की तरंगों को उद्वेलित करने वाली ऐसी ज्योति हैं जिसके प्रकाश में बुद्धि और हृदय एक साथ आलोकित होते हैं। यदि ये न हों तो साहित्य नीरस हो जाए और हमारा हृदय स्वर्गिक आनन्द से वंचित हो जाए। जहाँ ये अपने माधुर्य से अन्धकार के आवरण को छिन्न-भिन्न करके उसे प्रकाशित कर सकती हैं, जहाँ ये निराशा के बंधनों में जकड़े हुए पत्रों में समीर की तीव्र गति डाल सकती हैं, जहाँ ये अन्तरतम की असह्य पीड़ा को क्षणमात्र में दूर कर सकती हैं; वहाँ ये गम्भीर से गम्भीर आघात पहुँचाने की भी क्षमता रखती हैं। इस पर भी यही कहना होगा कि ये सूक्तियाँ मानव सृष्टि में कल्पतरु के समान हैं।

इन सूक्तियों की विशाल छाया में विश्राम कर मानव अपने जीवन पथ की थकान को दूर कर भविष्य की दुर्गम यात्रा को शांतिपूर्वक पूर्ण कर लेता है। अतः ये सूक्तियाँ मानव जगत् में ईश के समान ही सर्वव्यापी बन गई हैं। इनकी उपदेशात्मक छटा निराली ही है। इनमें नीति के बचन अल्प शब्दों में गागर में, सागर के समान अद्वितीयता से व्यक्त होते हैं। हमारी संस्कृत देव भाषा में तो इनका भण्डार है। अन्य विदेशीय भाषाओं में भी इन पर अच्छी पुस्तकें निकली हुई हैं। हिन्दी में भी इन सूक्तियों पर निकली हुई कई पुस्तकें देखने को मिलीं, पर सभी अपने में अपूर्ण-सी ही थीं। हिन्दी में इस कमी को दूर के लिए मैंने यह क्षुद्र-सा प्रयास किया है। युग-युग के लब्ध प्रतिष्ठ मनीषियों की सूक्तियों के संकलन

में मेरे दस वर्ष बीते हैं। अब इन्हें कुछ-कुछ पूरा कर पाया हूं। अब मेरा प्रयास वृहत् सूक्ति कोश के रूप में आपके हाथ में है।

इस विशाल संदर्भ ग्रन्थ को पाठकों की सुविधा हेतु बारह खण्डों में विभाजित कर दिया है। वृहत् सूक्ति कोश का प्रत्येक खण्ड अपने में पूर्ण है। इसमें लगभग सभी लब्ध प्रतिष्ठ देशी-विदेशी विद्वानों, कवियों, विचारकों, संतों एवं दार्शनिकों की मूल व अनूदित सूक्तियों के रूप में अमरवाणी का संकलन है। इसमें मैंने आधुनिक लेखकों की सूक्तियों को भी उसी आदर से संकलित किया है जिस सम्मान से प्राचीन विचारकों एवं लेखकों की सूक्तियों को। प्रत्येक खण्ड के अंत में विषयों की अनुक्रमणिका के साथ-साथ रच-यिताओं की तालिका दे दी गई है। इससे पाठकों को विशेष सुविधा मिलेगी।

वृहत सूक्ति कोश का प्रत्येक खण्ड मेरे कृपालु पाठकों चाहे वे शिक्षार्थी हों, चाहे साहित्यकार हों, चाहे प्राध्यापक हों और चाहे राजनीतिज्ञ हों, के हाथों में से गुजरेगा, ऐसा मेरा अटूट विश्वास है। उनसे केवल मेरी सादर अनुनय यही है कि वे इनमें जो अपूर्णता एवं त्रुटि देखें उसके विषय में मुझे सूचित करने की कृपा करें। इनमें अधिक से अधिक संशोधन के लिए उदार भाव से मित्रों के परामर्श का स्वागत करूंगा।

विनीत

शरण

विषय-तालिका

सहानुभूति

सहानुभूति सहृदयता की निशानी है।

—अज्ञात

किसी का रुपया वापस दिया जा सकता है परन्तु सहानुभूति के दो शब्द वह ऋण है जिसे चुकाना मानव-शक्ति के बाहर है।

—अज्ञात

सहानुभूति और संवेदना दुःखी हृदय को और भी व्याकुल बना देती है।

—अज्ञात

पीड़ित मनुष्य जब स्नेह और सहानुभूति का शब्द सुनता है, तब अश्रुओं की झड़ी लग जाती है।

—अज्ञात

सहानुभूति अथवा दया पाने की क्षुधा हरेक मानव-हृदय में गुप्त रूप में किन्तु मजबूती के साथ छिपी रहती है।

—अज्ञात

यदि तुम्हारे अन्दर दूसरों के प्रति सहानुभूति नहीं तो तुम चाहे संसार के सबसे बड़े बुद्धिवादी क्यों न हो, किन्तु तुम कुछ भी नहीं बन सकोगे।

—विवेकानन्द (उत्तिष्ठत, जाग्रत)

यह सहानुभूति की भावना ही वह जीवन है, शक्ति है, बल है, जिसके बिना कितने ही बौद्धिक व्यायाम से तुम ईश्वर को नहीं प्राप्त कर सकते।

—विवेकानन्द (उत्तिष्ठत, जाग्रत)

प्रेम के बाद सहानुभूति मानव-हृदय की पवित्रतम भावना है।

—बर्क

सामान बढ़ाकर और बटोरकर सहानुभूति से आदमी हीन होता है। सहानुभूति बढ़ाने पर सामान अनिवार्यतः ही कम होता जाता है क्योंकि वह आसपास बँटता जाता है।

—जैनेन्द्रकुमार (पूर्वोदय)

सहानुभूति से हीन होकर मनुष्य की सुधार-साधना सम्भवनीय कार्य नहीं है।

—जैनेन्द्रकुमार (काम, प्रेम, परिवार)

घूमना-फिरना मस्तिष्क को विशद् करने में साधारणतया उपयोगी ही है। उससे सहानुभूति व्यापक होती है और जी खुलता है।

—जैनेन्द्रकुमार (प्रस्तुत प्रश्न)

संकट में मनुष्य को कोई हमदर्दी दिखाता है तो चाहे वाह्य संकट से निवृत्ति न भी हो तो भी उसके दिल की तसल्ली हो जाती है।

—बिनोवा भावे

क्रियात्मक सहानुभूति ग्राम निवासियों का विशेष गुण है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

जो सहानुभूति साम्राज्य की जड़ खोखली कर दे, विद्रोहियों को सिर उठाने का अवसर दे, प्रजा में अराजकता का प्रचार करे, उसे मैं अदूरदर्शिता ही नहीं, पागलपन समझता हूँ।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

व्यक्ति-हृदय ही से सहानुभूति की आशा होती है।

—प्रेमचन्द (प्रतिज्ञा)

जैसे कुछ रंगों में परस्पर सहानुभूति होती है, उसी तरह कुछ रंगों में परस्पर विरोध। लालिमा के संयोग,से कालिमा और भी भयंकर हो जाती है।

—प्रेमचन्द (निर्मला)

महिला की सहानुभूति हार को जीत बना सकती है।

—प्रेमचन्द (गोदान)

रोगी को देख आना एक बात है, दवा लाकर उसे देना दूसरी बात है। पहली बात शिष्टाचार से होती है, दूसरी सच्ची समवेदना से।

—प्रेमचन्द (बलिदान)

सहायता

जब हम अपने पैर की धूल से भी अपने को नम्र समझते हैं, ईश्वर हमारी सहायता करता है। केवल दुर्बल और असहायों पर ही दैवी कृपा होती है।

—महात्मा गांधी

ईश्वर उनकी सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं।

—कहावत

अपनी सहायता स्वयं करो तो भगवान् तुम्हारी सहायता करेगा।

—एच० स्पेन्सर

किसी की कुछ सहायता करना, उधार देने की एक वैज्ञानिक पद्धति है।

—अज्ञात

सहारा

साहसी पुरुष का कोई सहारा नहीं होता तो वह चोरी करता है, कायर पुरुष को कोई सहारा नहीं होता तो वह भीख माँगता है, लेकिन स्त्री को कोई सहारा नहीं होता तो वह लज्जाहीन हो जाती है। युवती का घर से निकलना मुँह से बात निकलना है।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

तिनके का सहारा पाने वाले की आशाएँ बहुत लम्बी हो उठती हैं।

—अज्ञात

किसी अवलम्ब के बिना मनुष्य को भटक जाने की शंका सदैव बनी रहती है।

—प्रेमचन्द (नैराश्य लीला)

इस विश्व में किसी दुःखी मानव के लिए थोड़ी-सी सहायता ढेरों उपदेश से कहीं अधिक अच्छी है।

—बुलवर

सान्त्वना

अश्रु सान्त्वना का ओसकण है।

—बायरन

दुखियारों को हमदर्दी के आँसू भी कम प्यारे नहीं होते।

—प्रेमचन्द

साम्प्रदायिकता

मस्जिद से मंदिर लड़ते हैं
गिरजा से लड़ते विहार मठ,
धर्म अनर्थ कर रहा कितना
करते हैं अधर्म पामर शठ।

—सोहनलाल द्विवेदी (युगाधार)

साथी

जो मनुष्य अपने साथियों के चुनाव में विवेकी नहीं है वह अपने समय का सदुपयोग नहीं कर सकता।

—जर्मी टेलर

जब तुम्हें मौका मिले तो अपने से ज्यादा अच्छों का साथ करो, यही ठीक और वास्तविक अभिमान है।

—चेस्टर फील्ड

जो अन्त तक साथ निभाये ऐसा साथी पत्नी के सिवा दूसरा नहीं।

—प्रेमचन्द

तेरा साथी अगर जल्दी करता है तो वह तेरा साथी नहीं है।

—सादी

साधक

साधक भी उसी प्रकार अपने भीतर अमरत्व को प्राप्त करता है, वह जब सुदृढ़, सुसम्पूर्ण हो जाता है, तो उसका बाह्य पदार्थ क्रमशः शिथिल हो जाता है। तब प्राप्ति तो करता है भीतर और देता है बाहर।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (मरण)

जो साधक हैं, उनके लिए परमार्थ लाभ के लिए अपनी शक्ति का रक्षण आवश्यक है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (अन्दर-बाहर)

नाव जल में रहे तो कुछ हर्ज नहीं, परन्तु नाव में जल नहीं जाना चाहिए। इसी प्रकार साधक चाहे संसार में रहे परन्तु साधक के मन में संसार नहीं रहना चाहिए।

—रामकृष्ण परमहंस

साधक के लिए सबसे बड़ा प्रतिबन्ध यश की चाह है।

—अज्ञात

साधन

जो साधन आत्म-शक्ति को जाग्रत करता है वह इतना परिपूर्ण हो जाता है कि अपने को गोपन नहीं कर सकता।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (आश्रम)

अभ्यास की दृष्टि रही तो साधन काम आते हैं। अभ्यास की दृष्टि न रही तो उत्तम साधन भी निकम्मे हो जाते हैं।

—विनोबा भावे

उत्तम साध्य के लिए उत्तम साधन भी होना चाहिए। सुगन्ध की प्राप्ति चन्दनादि सुगन्धित द्रव्यों से ही सम्भव है। मिट्टी का तेल जलाकर हवन की सुगन्धि नहीं पैदा की जा सकती।

—अज्ञात

पाप कर्म से दूर रहना, लगातार पुण्य में लगे रहना, अच्छी मनोवृत्ति रखना और शुभ आचरण करना—यह सबसे बड़ा कल्याण का साधन है।

—महाभारत

साधनों की पूर्णता के साथ उसकी सिद्धि अपरिहार्य है।

—विवेकानन्द (उत्तिष्ठत, जाग्रत)

आदर्श की प्राप्ति परिणाम मात्र है। साधन उसका कारण है। अतः साधनों की चिन्ता ही जीवन की सफलता की कुंजी है।

—विवेकानन्द (उत्तिष्ठत, जाग्रत)

साध्य

साध्य के लिए साधन होते हैं, साधन के लिए साध्य नहीं।

—विनोबा भावे

साध्य कितने भी पवित्र क्यों न हों, साधन की पवित्रता के बिना उनकी उपलब्धि सम्भव नहीं।

—कमलापति त्रिपाठी (बापू और मानवता)

साधना

जीवन-यात्रा की साधना में अपनी शक्ति की चर्चा जितनी भी करें; किन्तु ईश्वर की चिर-प्रवाहित अनुकूल दक्षिण वायु के लिए अपने समस्त पात्र एकदम पूर्ण भाव में खोल देने की बात न भूल जाएँ।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (कठिन तथा सहज)

व्यक्त इच्छा जब खाने की माँग करती है तब वह उसे अव्यक्त स्वास्थ्य की इच्छा से शासन में नियमित करने की चेष्टा करते हैं। शरीर के सम्बन्ध में यही साधना कहलाती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (मुक्ति पथ)

आत्मा में परमात्मा के अनन्त आनन्द की अबाध उपलब्धि करने का उपाय है—पाप परिशून्य मंगल साधना।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (मुक्ति पथ)

तरसते हैं हम आठों याम,
इसी सेसुख अति सरस,प्रकाम;
झेलते निशिदिन का संग्राम,
इसी से जय श्रीराम;
अलभ है इष्ट, अतः अनमोल,
साधना ही जीवन का मोल।

—सुमित्रानन्दन पंत (आधुनिक कवि)

हमारे जीवन की प्रधान साधना ही यह है कि बाहर की वस्तु बाहर ही रहे, भीतर जाकर वह विकार की सृष्टि न कर पाए।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (विभाग)

मुक्ति-साधना का मार्ग मनुष्य की एकता की साधना में है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (वृत उद्यापन)

भीतरी साधना जब आरम्भ हो जाती है तो बाहर उसके कई एक लक्षण प्रकाशित होने लगते हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (फल)

उद्देश्य को यदि आरम्भ से ही साधना के पथ पर थोड़ा-थोड़ा प्राप्त न करते रहें, तो इस दीर्घ अराजकता के अवकाश में साधना ही सिद्धि के स्थान पर अधिकार जमा लेगी, शुचिता को ही अन्तिम प्राप्ति समझ लेंगे और अनुष्ठान ही देवता बन जायेगा।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (भूमा)

पुरुषों की साधना की जगह स्त्रियों का अनधिकार प्रवेश किसी भी दशा में क्षम्य नहीं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (दो बहनें)

साधना के दो अंग हैं—एक ग्रहण करना दूसरा त्याग। एक कठिन, दूसरा सरल।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (कठिन तथा सहज)

आत्मा द्वारा विश्वात्मा में प्रवेश करना ही तो हमारी साधना का लक्ष्य है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (आत्मा की दृष्टि)

जितनी सचेष्टता के साथ हम साधना का आनन्द मानकर, कसकर, वक्ष प्रसारित करके, प्रवृत्त हो सकें उतनी यदि हमारे भीतर ही क्षय हो जाय तो बड़ी विपत्ति खड़ी हो जायेगी।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (संहरण)

जो आप्त वाक्य की दुहाई देकर आत्म-बुद्धि और आत्मशक्ति की अवमानना को प्यार से पालते-पोसते रहते हैं, वे कभी भी ऐसी साधना को स्थायित्व और गाम्भीर्य के साथ आगे नहीं बढ़ा सकते, जो साधना मानव को भीतर और बाहर से गुलामी से छुड़ा सकती है और जिसके द्वारा स्वाधीनता के दुसह दायित्व को समस्त शत्रुओं के हाथ से दृढ़ शक्ति के साथ बचाया जा सकता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (जन्मदिन)

साधु

कहहिं 'कबीर' सुनो भई साधो।
जम दरवजववाँ बाँधल जँवै पकरा॥

—कबीर (शब्दावली)

कोटि जज्ञ व्रत नेम तिथि, साध संग में होय।
विषय व्याधि सब मिटत है, सांति रूप सुख जोय।।
साध संग जग में बड़ो, जो करि जानै कोय।
आधो छिन सतसंग को, कलमख डारे धोय।।

—दयाबाई

कपड़े रँग कर जो न कपट का जाल बिछावे।
तन पर जो न विभूति पेट के लिए लगावे।।
हमें चाहिए सच्चे जी वाला वह साधू।
जाति देश जग हित कर जो निज जन्म बनावे।।

—अयोध्यासिंह उपाध्याय (पद्य प्रसून)

जाति न पूछो साध की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान।।

—कबीर (वचनावली)

आप रहे कोरा शरीर के वसन रँगावे।
घर तज कर के घरवारी से भी बढ़ जावे।।
इस प्रकार का नहीं चाहिए हमको साधू।
मन को मूँड़ न सकै मूँड़ को दौड़ मुड़ावे।।

—अयोध्यासिंह उपाध्याय (पद्यप्रसून)

एक कामरी में रहैं, दस साधु सुख पाय।
द्वै नरेस इक देश में, पै नहिं सकत समाय।।

—महावीर प्रसाद द्विवेदी

कष्ट सहने पर भी साधु पुरुष मलिन नहीं होते, जैसे स्वर्ण को ज्यों-ज्यों तपाया जाय त्यों-त्यों चमकता है।

—अज्ञात

कबिरा संगत साधु की, हरै और की व्याधि।
संगत बुरी असाधु की, आठो पहर उपाधि।।

—कबीर

सब बन तौ चंदन नहीं, सुरा का दल नाहिं।
सब समुद्र मोती नहीं, यों साधु जग माहिं।।

—कबीर

सिहन के लँहडे नहीं, हंसन की नहिं पाँत।
लालन की नहिं बोरियाँ, साधु न चलैं जमात।।

—कबीर

साधूनां दर्शनं पुण्यं तीर्थं भूता हि साधवः।
कालेन फलते तीर्थं सद्यः साधुसमागमः।।

(साधुओं का दर्शन ही पुण्य है इस कारण कि साधु तीर्थ रूप हैं, तीर्थ समय से फल देता है, किन्तु साधुओं की संगति शीघ्र ही फल देती है।)

—चाणक्य

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे।
साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने।।

(हरेक पर्वत पर माणिक्य नहीं होता और हरेक हाथी में मुक्ता नहीं मिलती। हर जगह साधु नहीं मिलते और सब वनों में चन्दन नहीं होता।)

—चाणक्य

मनसो यत्सुखं नित्यं स्वर्गोऽपि नरकोपमः।
तस्मात्पर सुखेनैव साधवः सुखिनः सदा।।

(जहाँ सदैव अपने मन को ही सुख मिलता है, वह स्वर्ग भी नरक के समान है। अतः साधु पुरुष हमेशा दूसरों के सुख से ही सुखी होते हैं।)

—पद्मपुराण

साधु वही है जो अपने साथियों की सेवा करता है और आपस में प्रेम-सम्बन्ध स्थापित करता है।

—डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

साध्वी

सुकन्या सुशील शिष्ट जननी जनक की,
श्वश्रु स्वसुर की सुकुलीन, शालीन वधू।
अमृत सुत की माँ, बहिन महामानव की,
वह नारी है साध्वी पत्नी स्व पति की।।

—अतुलकृष्ण गोस्वामी (नारी)

पर-गृह-निवास, एकाकी प्रवास गमन,
कुसंग, कुपुरुषालाप, कुसमय पथ भ्रमण।
कुचिंतन, कुश्रृङ्गार, खान-पान कुपठन,
साध्वी न भूल करें आचरण अनैतिक।।

—अतुलकृष्ण गोस्वामी (नारी)

सामर्थ्य

अपने सामर्थ्य का ज्ञान हमें शीलवान् बना देता है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

उनकी पूर्व निश्चिन्तता वैसी न थी जो अपनी सामर्थ्य के ज्ञान से उत्पन्न होती है। उसका मूल कारण उनकी अकर्मण्यता थी। उस पथिक की भाँति जो दिन भर किसी वृक्ष के नीचे आराम से सोने के बाद संध्या को उठे और सामने ऊँचा पहाड़ देखकर हिम्मत हार बैठे।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

जो मनुष्य ब्राह्मण को नेवता देता है, वह उसे दक्षिणा देने की भी सामर्थ्य रखता है।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

अपनी पहुँच विचारि कै, करतब करियै दौर।
तेते पांव पसारिय, जेती लंबी सौर।।

—वृन्द (सतसई सप्तक)

कोई मनुष्य माया के दुर्भेद्य अंधकार को चीर सकता है। जीवन और मृत्यु के मध्यवर्ती अपार विस्तृत सागर को पार कर सकता है। जिसमें वह सामर्थ्य हो वह मनुष्य नहीं, प्रेत-योनि का जीव है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

सामञ्जस्य

तर्क क्षेत्र में और कर्म क्षेत्र में जो दिति पुत्रों और अदिति पुत्रों के समान परस्पर पूर्ण विनाश के लिए सर्वदा उद्यत रहते हैं, प्रेमक्षेत्र में अपने भाई हो जाते हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (सामञ्जस्य)

प्रकृति में भी स्थिति और गति का सामञ्जस्य हम केवल एक जगह देख पाते हैं और वह है प्रेम।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (सामञ्जस्य)

हमारे बीच पाप समग्र को क्षत करके किसी एक को ही स्फीत करता है। इस कारणवश केवल इतना ही नहीं कि अपने ही स्वभाव में सामञ्जस्य नहीं रहता, चारों दिशाओं के साथ, समाज के साथ हमारा सामञ्जस्य नष्ट हो जाता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (स्वभाव लाभ)

सामाजिकता

समाज में हमारी सामाजिकता बहुतांश में इसी भाव से अपनी शक्ति खर्च करती रहती है, वह समाज के व्यक्तियों के प्रति विशेष प्रतिवश होकर नहीं, किन्तु अपने को खर्चकर डालने की एक प्रवृत्ति के वश होकर।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (अंदर-बाहर)

साम्राज्य

साम्राज्य में एक हठ, गर्व आर अकड़ होती है जिस पर वह सैकड़ों गुलामों का कत्लेआम कर सकता है।

—सुभाषचन्द्र बोस

सल्तनत किसी आदमी की जायदाद नहीं, बल्कि एक ऐसा दरख्त है जिसकी हर शाख और पत्ती एक-सा खुराक पाती है।

—प्रेमचन्द

सावधान

दूसरे के कष्टों से सावधान होना अच्छा है।

—प्यूब्लियस साइरस

सावधान व्यक्ति कदाचित् ही गलती करते हैं।

—कन्फ्यूशियस

दूसरे की मुसीबत से सावधान रहो जिससे कि दूसरे लोग तुमसे सबक न ले सकें।

—सादी

सावधानी

सावधानी बुद्धिमानी की सबसे बड़ी सन्तान है।

—विक्टर ह्यूगो

सभी प्रकार की सावधानी में, प्रेम की सावधानी, कदाचित् सच्चे सुख के लिए घातक नहीं है।

—बी० रसल

साहस

सच्चे साहस में न तो अधीरता है और न जल्दबाजी।

—माताजी

अपने दोषों को स्वीकार करना एक उत्कृष्टतम साहस है।

—माताजी

साहसी व्यक्ति विश्वासी भी होता है।

—सिसरो

उचित को जानना और उसपर अमल न करना साहस का अभाव है।

—कन्फ्यूशस

मानव के सभी गुणों में साहस प्रथम गुण है; क्योंकि यह सभी गुणों का दायित्व लेता है।

—चर्चिल

संकट में साहस होना आधी सफलता प्राप्त कर लेना है।

—प्लाउटस

बिना डर के, स्वयं को संकट में डालना साहस नहीं है अपितु उचित ध्येय में दृढ़ निश्चयी होना है।

—प्लूटार्क

बिना निराश हुए पराजय को सह लेना धरा पर साहस की सबसे बड़ी परीक्षा है।

—आर० जी० इंगरसोल

थोड़े से साहस के अभाव में काफी प्रतिभा विश्व से खो जाती है। प्रत्येक दिन ऐसे अपरिचित व्यक्तियों को कब्र में भेजता है जिनकी भीरुता ने उनको प्रथम प्रयास से वंचित रखा है।

—सिडनी स्मिथ

तजत प्राण, बरु यत्नहिं माहीं। साहस तजत मानिजन नाहीं।

—द्वारिकाप्रसाद मिश्र (कृष्णायन)

साहस दो प्रकार का होता है। एक प्रकार है तोप के सामने अड़ना। दूसरी प्रकार है आध्यात्मिक विश्वासों पर डटे रहना।

—विवेकानंद (उत्तिष्ठत, जाग्रत)

साहस और सच्ची बहादुरी दोनों की रक्षा और उनकी सहायता करने में है। विश्वास मानो, जो मनुष्य केवल चित्त विनोदार्थ जीव-हिंसा करता है, वह निर्दयी घातक से भी कठोर हृदय है। वह घातक के लिए जीविका है; किन्तु भिखारी के लिए केवल दिल बहलाने का एक सामान है।

—प्रेमचन्द (शिकारी राजकुमार)

रुकना न तुम जब तक तुम्हारे श्वास का लवलेश है।
हिम्मत न हारो रे हृदय यह साधना का देश है।

—शिवमंगल सिंह 'सुमन' (प्रलय-सृजन)

है करम रेख मूठियों में ही, बेहतरी बाँह के सहारे है।
कर नहीं कौन काम हम सकते, क्या नहीं हाथ में हमारे है॥
जो रहे ताकते पराया मुँह, तो दुःखों से न किसलिए जकड़े।
क्यों न हों पाँव पर खड़े अपने, और का पाँव किसलिए पकड़े॥

—अयोध्यासिंह उपाध्याय (चुभते चौपदे)

निहचै चला भरम जिउ खोई। साहस जहाँ सिद्धि तहँ होई॥

—मलिक मुहम्मद जायसी (जायसी ग्रंथावली)

अ-सार है जीवन जीव लोक में,
स-सार देखीं युग वस्तुएँ यहाँ,
स्व-दुःख में साहस-पूर्ण भावना,
दया दिखाना पर-दुःख में सदा।

—अनूप (वर्द्धमान)

साहसी

साहसी लोग इस बात की खोज नहीं करते कि शत्रु कितने हैं, परन्तु वे तो यह खोजते हैं कि वे कहाँ हैं।

—अज्ञात

कोई भी ऐसा मानव साहसी नहीं हो सकता जो पीड़ा को जीवन की सबसे बड़ी बुराई समझता हो।

—सिसरो

साहित्य

साहित्य वह है जिसे पढ़ने से प्रतीत हो कि लेखक ने अन्तर से सब कुछ पुष्प की तरह प्रस्फुटित किया है।

—शरच्चन्द्र (पत्रावली)

साहित्य-सृजन के अन्तराल में जो स्रष्टा रहता है, यदि वह छोटा हुआ तो उसकी सृष्टि भी बड़ी होने में बाधा पाती है।

—शरच्चन्द्र (पत्रावली)

विश्व में जो कुछ सत्य घटित होता है उसी को बिना विचारे आँख मूँदकर साहित्य का उपकरण बनाने से वह सत्य तो हो सकता है, पर सत्-साहित्य नहीं होता।

—शरच्चन्द्र (निबन्धावली)

साहित्य में मनुष्य अपने ही अन्तरतम का परिचय देता है। अपने अगोचर में, जैसे परिचय देता है पुष्प अपनी सुगन्ध में, नक्षत्र अपने आलोक में।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य का तात्पर्य)

साहित्य जगन्नाथ का क्षेत्र है। जाति के नाम पर व्यक्ति का अपमान यहाँ नहीं चल सकता।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य में नवीनता)

साहित्य-सृष्टि, शिल्प-सृष्टि उस प्रलय लोक में है जहाँ कोई दायित्व नहीं, भार नहीं, जहाँ उपकरण माया है, उसका ध्यान-रूप ही सत्य है, जहाँ मानव अपने में सब कुछ आत्म-सा लिए बैठा है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य तत्त्व)

साहित्य का सहज अर्थ है नैकट्य अर्थात् सम्मिलन।

भाषा के क्षेत्र में साहित्य शब्द का तात्पर्य है, हृदय का योग कर देना, जहाँ योग ही अन्तिम लक्ष्य है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य का तात्पर्य)

सौन्दर्य-प्रकाश ही साहित्य या कला का मुख्य लक्ष्य नहीं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (प्रस्तावना)

साहित्य कोई श्रेयस्तत्त्व के विशुद्ध साँचे में खिलौना ढालने वाला कारखाना नहीं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (दो बहनें)

ज्ञान-राशि के सचित कोष का नाम ही साहित्य है।

—महावीरप्रसाद द्विवेदी

सबसे जीवित रचना वह है जिसे पढ़ने से प्रतीत हो कि लेखक ने अन्तर से सब कुछ फूल की तरह प्रस्फुटित किया है।

—शरच्चंद्र (पत्रावली)

जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न मिले, हम में गति और शक्ति न पैदा हो, हमारा सौन्दर्य-प्रेम न जाग्रत हो, जो हम में संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह आज हमारे लिए बेकार है, वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं।

—प्रेमचन्द

प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है।

—रामचन्द्र शुक्ल

साहित्य के अन्तर्गत वह सारा वाङ्मय लिया जा सकता है जिसमें अर्थ बोध के अतिरिक्त भावोन्मेष अथवा चमत्कारपूर्ण अनुरंजन हो तथा जिसमें ऐसे वाङ्मय की विचारात्मक समीक्षा या व्याख्या हो।

—रामचंद्र शुक्ल

राजनीति क्षणभंगुर है, चंचल है, परन्तु साहित्य चिरस्थायी है, मंगलमय है, उसके आधार-भूत मूल्य की क्षति नहीं होती।

—अनन्तगोपाल शेवड़े

मानवजाति की इस अनन्त निधि में जितना कुछ अनुभूति-भण्डार लिपि बद्ध है, वही साहित्य है। और भी अक्षरांकित रूप में जो अनुभूति संचय विश्व को होता रहेगा, वह होगा साहित्य।

—जैनेन्द्र

जीवन की सत्योन्मुख स्फूर्ति जब भाषा द्वारा मूर्त और दूसरे को प्राप्त होने योग्य बनती है तब वही साहित्य होता है।

—जैनेन्द्र

साहित्यकार के मन की ओर से उसके साहित्य पर इस आजीविका के विचार का जिस मात्रा में बोझ पड़ेगा, उसी मात्रा में साहित्य की उत्तमता में क्षति आ जानी चाहिए, ऐसा मैं समझता हूँ।

—जैनेन्द्र

रोटी के बिना हम कई दिन रह लेंगे। हवा के बिना तो क्षणों में ही हमारा काम तमाम हो जायेगा। साहित्य उस हवा से सूक्ष्म, उससे भी अधिक अनिवार्य है।

—जैनेन्द्र

यह अस्वाभाविक होगा, और अस्वाभाविक वस्तु टिकती नहीं। अशिक्षितों के लिए अन्न-सत्र खोला जा सकता है, पर साहित्य नहीं रचा जा सकता। उनके दुःख-सुखों का वर्णन करने का नाम ही साहित्य नहीं है। किसी दिन यदि सम्भव हुआ तो अपना साहित्य वे स्वयं ही रचेंगे।

—शरच्चन्द्र (अधिकार)

साहित्य सच्चिदानन्द की प्यास और खोज का प्रत्यर्पण है।

—जैनेन्द्र

जो साहित्य समग्र रूप से मनुष्य की महिमा को प्रकाशितनहीं कर सकता। उस पर गौरव नहीं किया जा सकता, क्योंकि साहित्य में मनुष्य अपने ही संग को, अपने ही साहित्य को प्रकट करता है स्थायित्व के उपादानों से।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य का तात्पर्य)

मनुष्य अपने इन्द्रिय-बोध के जगत् को परिव्याप्त किए हुए विचित्र कला-कौशल से अपने भाव-रस भोग के जगत् की सृष्टि करने में प्रवृत्त है, यही उसका साहित्य है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य का तात्पर्य)

प्रकृति की सृष्टि का जो दूरत्व है, साहित्य की भाषा का सेतु बनाकर उसे मर्मङ्गमकर नैकट्य देनाहोगा। ऐसा नैकट्य देता है साहित्य, इसलिए साहित्य को हम साहित्य कहते हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य का तात्पर्य)

घटना जब वास्तव के बंधन से मुक्त होकर कल्पना के विशाल परिप्रेसित में अर्थात् विस्तृति में उतर आती है, तभी हमारे मन के लिए उसका साहित्य हो जाता है विशुद्ध और बाधाहीन।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य का तात्पर्य)

साहित्य से ही साहित्य जाग उठता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य का तात्पर्य)

जो आनन्द देता है। उसी को मनं 'सुन्दर' कहता है, और वही साहित्य की सामग्री है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (प्रस्तावना)

मनुष्य का स्वयं को देखने का जो काम है, उस काम को करता है साहित्य।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (प्रस्तावना)

मनुष्य का विश्व यदि मनुष्य के मन के बाहर ही हो, तो वही तो निरानन्द का कारण है। मन जब उसे अपना बना लेता है तभी उसकी भाषा में शुरू हो जाता है साहित्य, उसकी लेखनी विचलित हो जाती है, नूतन गान की वेदना से।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य का तात्पर्य)

पशु-पक्षी का चैतन्य प्रधानतः अपनी जीविका में ही सीमाबद्ध है, मनुष्य का चैतन्य विश्व में मुक्ति का पथ तैयार कर रहा है, विश्व में प्रसारित कर रहा है अपने को, साहित्य उसी का एक बड़ा पथ है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य का तात्पर्य)

भाषा के क्षेत्र में जो प्रकाश है, वह काल के स्थायी क्षेत्र में विचित्र फूल-फल और पल्लव शाखा काण्ड से भाव और रूप के समवाय से, समग्रता में अपने अस्तित्व का ही चरम गौरव घोषित करता रहता है। इसीको हम कहते हैं साहित्य।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य का तात्पर्य)

साहित्य की ओर से कहने की बात यह है कि वहाँ अन्य कोई तर्क ही ग्राह्य नहीं, केवल इतना उत्तर मिल जाना ही पर्याप्त है कि जिन चरित्रों की अवतारणा हुई है वे सृष्टि की कोटि में पहुँच चुकी हैं, वे प्रत्यक्ष हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य का तात्पर्य)

विशुद्ध साहित्य अप्रयोजनीय है, उसका जो रस है वह अहैतुक है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य तत्व)

साहित्य का विचार साहित्य की व्याख्या है, साहित्य का विश्लेषण नहीं। यह व्याख्या प्रधानतः साहित्य-विषय के व्यक्ति को लेकर होनी चाहिए, उसके जाति-कुल को लेकर नहीं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य में नवीनता)

साहित्य में अच्छा लगना और बुरा लगना ही चरम बात है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य में विचार)

महत् साहित्य का गुण है अपूर्वता, यानी मौलिकता। साहित्य जब अक्लान्त शक्तिमान रहता है तब वह चिरन्तन को ही नए रूप में प्रकाशित कर सकता है। यही उसका काम है; इसीका नाम है मौलिकता।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य में नवीनता)

भाषा को तोड़-मरोड़ कर अर्थ का अनर्थ करके, भावों को स्थान-कुस्थान में कसरत कराकर पाठकों के मन को कदम-कदम पर धक्का देकर आश्चर्यचकित कर देना ही साहित्य का चरमोत्कर्ष है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य में नवीनता)

साहित्य और कला में कोई वस्तु जो सत्य है उसका प्रभाव मिलता है रस की भूमिका में, अर्थात् वह वस्तु जब ऐसी एक रूपरेखा-गीत की सुषमायुक्त एकता पा लेती है, जिसके द्वारा हमारा चित्त आनन्द के मूल्य पर उसे सत्य मान लेता है, तभी उसका परिचय सम्पूर्ण होता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (तथ्य और सत्य)

मानव ने नाना प्रकार के आस्वादन में ही अपनी उपलब्धि करनी चाही है, बाधाहीन लीला के क्षेत्र में। उसी वृहत् विचित्र लीला जगत् की सृष्टि है साहित्य।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (प्रस्तावना)

मृत हो कि जीवित जाति का साहित्य जीवन चित्र है।
वह भ्रष्ट है तो सिद्ध फिर वह जाति भी अपवित्र है॥

—मैथिलीशरण गुप्त (भारत भारती)

भाव गमन के लिए परम कमनीय कलाधर।
रस उपवन के लिए कुसुम-कुल विपुल मनोहर॥
उक्ति अवनि के लिए सलिल सुरसरि का प्यारा।
ज्ञान नयन के लिए ज्योतिमय उज्ज्वल तारा॥
है जन मन मोहन के लिए मधुमय मधु ऋतु से न कम।
संसार सरोवर के लिए है साहित्य सरोज सम॥

—अयोध्यासिंह उपाध्याय (पद्य प्रमोद)

अंधकार है वहाँ जहाँ आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है।।

—अज्ञात

सच्चे साहित्य का निर्माण तो एकान्त चिन्तन और एकान्त साधनों में होता है।

—अज्ञात

साहित्य की सरिता जब जनता के हर्ष-विषाद से तरंगित होती है तभी गंगा के तुल्य उसमें सब अवगाहन करते हैं, अन्यथा वह कर्मनाशा के तुल्य त्याज्य है।

—अज्ञात

समाज नष्ट हो सकता है, राष्ट्र भी नष्ट हो सकता है, किन्तु साहित्य का नाश कभी नहीं हो सकता।

—अज्ञात

साहित्य के साधकों ने इस अनुपम उद्यान को सदैव अपने हृदय के रस से सींचा है। यही कारण है कि इसका परिमल हमारे मुरझाते हुए हृदय को हरा-भरा कर देता है।

—अज्ञात

साहित्य का पतन राष्ट्र के पतन का द्योतक है, पतन की ओर वे परस्पर एक दूसरे का साथ देते हैं।

—गेटे

साहित्य का अध्ययन नवयुकों का पालन पोषण करता है, वृद्धों का मनोरंजन करता है, उन्नति का शृंगार करता है, मुसीबत को धीरज देता है, घर में प्रमुदित करता है और बाहर विनम्र बनाता है।

—सिसरो

केवल लिखना ही कठिन नहीं है, लिखने की शक्ति भी कम कठिन नहीं है।

—शरच्चन्द्र (पत्रावली)

साहित्य, संगीत और कला से रहित पुरुष बिना पूँछ और सींग के सांक्षात् पशु ही है। वह बिना व्रण खाए जो जीता है, यह पशओं का परम सौभाग्य है।

—भर्तृहरि

महिलाओं के विरुद्ध कड़ी बातें लिखना बहादुरी हो सकती है, किन्तु उस पथ पर चलकर सच्चे साहित्य का सृजन नहीं हो सकता।

—शरच्चन्द्र (पत्रावली)

वर्तमानकाल ही साहित्य का चरम हाईकोर्ट नहीं है।

—शरच्चन्द्र (पत्रावली)

जो कुछ घटित होता है, उसकी अविकल तस्वीर को भी मैं जैसे साहित्य-वस्तु नहीं कहता, वैसे ही मेरा मत है कि जो घटित नहीं होता अथच समाज अथवा प्रचलित नीति की दृष्टि में जिसका घटित होना अच्छा है, कल्पना के द्वारा उसकी उच्छृंखल गति से भी साहित्य की बहुत अधिक विडम्बना होती है।

—शरच्चन्द्र (साहित्य और नीति)

दुनिया में जो कुछ सत्य ही घटित होता है, उसीको बिना विचारे आँख मूँदकर साहित्य का उपकरण बनाने से वह सत्य तो हो सकता है, पर सत्साहित्य नहीं होता।

—शरच्चन्द्र (साहित्य और नीति)

आधुनिक साहित्य दुर्नीति का वह प्रचार नहीं करता। थोड़ा-सा थहा कर देखने से उसकी सारी दुर्नीति के मूल में कदाचित् वही एक चेष्टा मिलेगी कि वह मानव को मानव ही सिद्ध करना चाहता है।

—शरच्चन्द्र (आधुनिक साहित्य की कैफियत)

कोरी कल्पना केवल जड़ हो सकती हैं, उसमें (साहित्य-सृजन में) जान नहीं डाल सकती है—ढो सकती है, पर राह नहीं दिखा सकती।

—शरच्चन्द्र (चरित्रहीन)

सिद्धान्त

यदि मैं एक मिट्टी के ढेले को पूर्णतया जान लूं, तो सारी मिट्टी को जान लूंगा। यह है सिद्धान्तों का ज्ञान, किन्तु उनका समायोजन अलग-अलग होता है। जब तुम स्वयं को जान लोगे, तो सब कुछ जान लोगे।

—स्वामी विवेकानन्द

मैंने कितनी बार कहा है, जीवन को जो रस न दे सके।
वे सिद्धान्त तर्क-संगत भी, हैं अयुक्त, गतिहीन, पथ-थके ॥

—शरणबिहारी गोस्वामी (पाषाणी)

सिद्धान्त सत्य और न्याय के लिए उत्कण्ठा का नाम है।

—हैजलिट

महत्वपूर्ण सिद्धान्त लचीले हो सकते हैं और होने भी चाहिए।

—लिंकन

वास्तविक तथ्यों के कारण सिद्धान्तों में व्यावहारिक दृष्टि से परिवर्तन हो जाता है।

—कूपर

सिद्धान्तविहीन जीवन का कोई मूल्य नहीं है।

—अज्ञात

सिद्धि

तपस्या करके ही सिद्धि प्राप्त की जा सकती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (सृष्टि)

रस की उन्मत्तता में हमारा चित्त जब उन्मथित हो उठता है तो उसी को हम सिद्धि समझ बैठते हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (विवेक शंका)

जब सिद्धि की मूर्ति किसी परिणाम में दिखायी देने लगती है तब वह आनन्द की ओर हमें अपने आप खींच ले जाती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (निष्ठा)

योगाभ्यास आत्मा का विषय है इसीलिए सिद्धियाँ शरीर को प्राप्त नहीं होतीं बल्कि आत्मा को होती हैं।

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

निजी मनुष्यता को केवल शुष्क, कृश, आनन्द हीन करने को ही सिद्धि का लक्षण मानते हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (अन्दर-बाहर)

अपने को पहचानो आर्य, मूलमंत्र यह मानो आर्य।
नहीं कहीं बाहर निज सिद्धि, आत्मानं स्वात्मानं विद्धि ।।

—मैथिलीशरण गुप्त (हिन्दू)

विधातुः सर्वलोकस्यामि प्रायोऽप्येष दृश्यते।
यत्कार्य-सिद्धितः पूर्वं कष्टस्वी करणं मतम् ।।

(समस्त विश्व की सृष्टि करने वाले प्रजापति का अभिप्राय भी यही दीखता है कि किसी भी कार्य की सिद्धि से पूर्व कष्ट या क्लेश उठाना ही चाहिए।)

—अज्ञात

बिना कर्म किसी ने सिद्धि नहीं पायी।

—श्रीकृष्ण (भगवद्गीता)

सिपाही

सिपाही का तो जीवन ही आग में कूदने के लिए है।

—प्रेमचन्द (सती)

सिपाही की बहादुरी का प्रमाण उसकी तलवार है, उसकी जबान नहीं।

—प्रेमचन्द (दो सखियाँ)

तोपके सामने खड़ा सिपाही भी बिच्छु को देखकर सशंक हो जाता है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

वह साधु नहीं है, जिसका बल धर्म है, वह विद्वान् नहीं है, जिसका बल तर्क है। वह सिपाही है, जो डंडे के जोर से अपना स्वार्थ सिद्ध करता है, इसके सिवा उसके पास कोई दूसरा साधन ही नहीं।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

कोई सिपाही अपने शत्रु पर वार खाली जाते देखकर झल्ला-झल्ला कर और भी तेजी से वार करता है।

—प्रेमचन्द (निर्मला)

कमज़ोर सिपाही ताल ठोंक कर अखाड़े में उतर आता है, पर तलवार की चमक देखते ही उसके हाथ-पाँव फूल जाते हैं।

—प्रेमचन्द (पिसनहारी का कुआँ)

सीख

हमारे जीवन का प्रत्येक अगला दिन पिछले दिन से कुछ ऐसे ढंग का हो, जिसमें हमने कुछ सीखा हो।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सीख का कतिपय ही स्वागत होता है। जिन्हें इसकी अधिक आवश्यकता है, वे ही इसे सब से कम पसन्द करते हैं।

—जानसन

जिन-जिन मनुष्यों से मैं मिलता हूँ वे किसी न किसी रूप में मुझ से श्रेष्ठ होते हैं, और इस प्रकार मैं उनसे कुछ सीख पाता हूँ।

—एमर्सन

सीख हिम के समान है, जब धीरे-धीरे गिरती है तब अधिक देर तक टिकती है और मस्तिष्क में गहरायी तक पहुँचती है।

—कालरिज

शिक्षा वाको दीजिए, जाको सीख सोहाय।
सीख न दीजै बाँदरा, अपन हानि कराय॥

—अज्ञात

विनयं राजपुत्रेभ्यः पण्डितेभ्यः सुभाषितम्।
अमृतं द्यूतकारेभ्यःस्त्रीभ्यः शिक्षेत्तु कैतवम्॥

(विनयी होना राजपुत्रों से सीखना चाहिए, विद्वानों से सुभाषित, जुआरियों से झूठ बोलना और प्रपंच करना स्त्रियों से सीखना चाहिए।)

—चाणक्य

सीमा

जहाँ सीमा अपनी सीमा से स्थिर होकर नहीं बैठी रहती, जहाँ वह अहरह असीम की ओर चलती रहती है। उस गति में ही उसका शेष नहीं, उस गति में ही असीम को सीमा प्रकाशित करती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (आत्मा का प्रकाश)

दृष्टि, घ्राण, स्पर्शादि द्वारा, मन द्वारा, भय द्वारा, भक्ति द्वारा, बाह्य को नाना प्रकार से लेकर उस पर नाना रीति से आघात लगाकर, आघात खाकर हम बाह्य परिचय की सीमा पर पहुँच जाते हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (तीन मंजिल)

सीमा अपने संयम की ओट में स्वयं को छिपाकर सत्य को प्रकाशित करती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (सृष्टि)

लेऊँगा, छीनूंगा, संचय करूँगा यही वेग यदि व्याधि के विकार के समान जाग उठें तो क्षोभ और ताप की सीमा ही न रहे।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (स्वास्थ्य-प्राप्ति)

जगत् में जगदीश्वर का जो प्रकाश है, वह सीमा में असीम का प्रकाश है। असीम का सीमा के वैपरीत्य है, यदि वह न होता तो असीम का प्रकाश ही न होता। किन्तु यदि केवल वैपरीत्य ही रहता तो भी सीमा असीम को आच्छादित किए रहती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकर (आत्मा का प्रकाश)

सुकर्म

सुकर्म कभी नष्ट नहीं होता, यह निधि कर्त्ता की आवश्यकता के लिए सुरक्षित रखी रहती है।

—काल्ड्रेयन

मानव के मर जाने के वाद भी उसके सुकर्म जीवित रहते हैं।

—अज्ञात

सुख

कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा,
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।

(किसी को सुख अथवा एकमात्र दुःख नहीं मिलता—दुःख और सुख रथ के पहिये की तरह कभी ऊपर और कभी नीचे रहा करते हैं।)

—कालिदास

सुख का रहस्य त्याग में है।

—एण्ड्रू कारनेगी

सुख विश्व की किसी भी वस्तु में नहीं है, अतः वह किसी भी बड़े से बड़े वैभव द्वारा प्राप्त नहीं हो सकता। सुख तो मन की एक स्थिति है जो आत्म साधन द्वारा प्राप्त होती है।

—अज्ञात

यो वै भूमा तत्सुखं नाल्पे सुखमस्ति।
भूमैव सुखं भूमा त्वैव विजिज्ञा सितव्यः ॥

(जो पूर्ण है वह सुख है, अल्प में सुख नहीं. पूर्ण ही सुख है, पूर्ण को ही जानना चाहिए।)

—छान्दोग्य उपनिषद्

यदि मनःस्थिति बिगड़ी हुई हो तो दूसरे मौकों पर सुखदायक प्रतीत होने वाले पदार्थ भी सुख नहीं दे सकते।

—वेद

केवल सद्गुण ही इस पृथ्वी पर सुख है।

—शेक्सपियर

राग के समान अग्नि नहीं है, द्वेष के समान मल नहीं, स्कन्धों के समान दुःख नहीं, शान्ति से बढ़कर सुख नहीं।

—धम्मपद

नीरोग होना परम लाभ है, सन्तोष परम धन है, विश्वास सबसे बड़ा बन्धु है, निर्वाण परम सुख है।

—धम्मपद

यही जीवन का सच्चा सुख है—ऐसे उद्देश्य में जिसे तुम स्वयं ही महान् समझते हो, काम आ जाना;- इससे पूर्व कि तुम घूरे पर रद्दी की तरह उठाकर फेंक दिए जाओ, कार्य करते-करते पूर्ण रूप से घिस जाना। प्रकृति की एक शक्ति बन जाना कहीं अच्छा है बजाय इसके कि तुम रोग और आपत्तियों की एक ज्वर पीड़ित, स्वार्थ पूरित, क्षुद्र पीड़ा बने हुए रोते फिरो कि विश्व तुम्हें सुखी बनाने की ओर कुछ ध्यान नहीं देता।

—जार्ज बर्नार्ड शॉ

विषदिग्धस्य भक्तस्य दन्तस्य चलितस्य च।
अमात्यस्य च दुष्टस्य मूलाबुद्धरणं सुखम्॥

(विषाक्त भोजन, हिले हुए दंत और कुपरामर्श देने वाले महामात्य का समूल विनाश कर देना ही सुखदायी होता है।)

—हितोपदेश

सुख प्राप्त करने के लिए दुःख प्राप्त करना चाहिए, यह बात् सत्य है किन्तु इसीलिए, यह स्वतः सिद्ध नहीं हो जाता कि जिस तरह भी हो बहुत-सा दुःख भोग लेने से ही सुख हमारे कंधों पर आ बैठेगा। यह इस काल में भी सत्य नहीं है और परलोक में भी नहीं।

—शरच्चन्द्र (श्रीकांत-पर्व २)

जिसके सुख की घर गृहस्थी है, स्नेह की छाया है, वह हर पग पर सुख की तस्वीर खींचता जाता है, आशा के बीज बोता जाता है। जान पड़ता है, जहाँ-जहाँ उसके पैर पड़े वहाँ-वहाँ क्षण भर में मानों एक-एक लता अंकुरित और पुष्पित हो उठती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (सड़क की बात)

सुख है न जाने कहाँ, चाहे जहाँ मान लो।
मन अपना है और मानना भी अपना।

—मैथिलीशरण गुप्त (सिद्धराज)

इस जीवन में मनुष्य का सुख वासनाओं के अभाव में नहीं है, अपितु उन पर शासन करने में है।

—टेनीसन

'सु' कहो व 'दुःख' तो शून्य है, यह है मेरा कहना,
तुम सुख और दुःख दोनों के ऊपर उठकर रहना।

—मैथिलीशरण गुप्त (जयभारत)

सुख आदमी के सामने आता है, तो दुःख का मुकुट पहनकर। जो उसका स्वागत करता है, उसे दुःख का भी स्वागत करना चाहिए।

—स्वामी विवेकानंद

औरों को हँसते देखो मनु
हंसों और सुख पाओ;
अपने सुख को विस्तृत कर लो
सबको सुखी बनाओ।

—जयशंकर प्रसाद (कामायनी)

दुःख की पिछली रजनी बीच,
विकलता सुख का नवल प्रभात।

—जयशंकर प्रसाद (कामायनी)

वेदना विकल फिर आई
मेरी चौदहों भुवन में
सुख कहीं न दिया दिखाई
विश्राम कहाँ जीवन में!

—जयशंकरप्रसाद (आँसू)

'सद्' का परित्याग का किसने सुख पाया जीवन में?
'असद्' ग्रहण कर शान्त रह सका कहीं न कोई मन में॥

—अतुलकृष्ण गोस्वामी (नारी)

लोभ पाप का बीज है, रस व्याधी का बाप।
राग कैद का बीज, तज तीन सुखी हो आप॥

—गिरिधर कविराय (कुंडलियाँ)

कह 'गिरिधर कविराय' सुखी सो कैसे होवै।
तष्णा राग व द्वेष ईर्षा मत्सर बोवै॥

—गिरिधर कविराय (कुंडलियाँ)

जग में सुख की प्राप्ति के लिए एक सहायक दुःख है।
वही जगाता है सद्गुण को सद्गुण लाता सुख है॥
बाधा, विघ्न, विपत्ति, कठिनता जहाँ जहाँ सुन पाना।
सब के बीच निडर हो जाना दुःख को गले लगाना॥

—रामनरेश त्रिपाठी (पथिक)

यदि उद्दीप्त हृदय में सच्चे सुख की हो अभिलाषा।
वन में नहीं जगत में आकर करो प्राप्ति की आशा॥

—रामनरेश त्रिपाठी (पथिक)

जैसे संडली लोह की, छिन पानो छिन आग।
ऐसे दुख सुख जगत के, 'सहजो' तू मन पाग॥

—सहजोबाई

जहाँ पीत तहँ विरह है, जहाँ सुख दुख होय।
जहाँ फूल तहाँ काँटा है, जहाँ दिख तहाँ सेख॥

—अयोध्यासिंह उपाध्याय (हरिऔध सतसई)

पूरा निश्चित है नहीं, सुख-दुःख का परिपाक।
नथ-नथूनी हित विद्ध हो, हुई अलंकृत नाक॥

—अयोध्यासिंह उपाध्याय (हरिऔध सतसई)

यह रंग-बिरंगी उषा लिए है दुख की काली रातें,
हैं ग्रीष्म काल की दाहक लपटों में रस की बरसातें।
यह बनना मिटना अमिट काल के चल चरणों का क्रम है,
छात्रा के चित्रों सदृश यहाँ हैं ये सुख दुःख की बातें।

—भगवतीचरण वर्मा (रंगों से मोह)

अविरत दुख है उत्पीड़न;
अविरत सुख भी उत्पीड़न,
दुख सुख की निशा दिवा में,
सोता जगता जग जीवन॥

—सुमित्रानंदन पंत (आधुनिक कवि)

देखूं सब के उर की डाली—
सब में कुछ सुख के तरुण फूल,
सब में कुछ दुःख के करुण फूल;
सुख-दुःख न कोई सका भूल।

—सुमित्रानंदन पंत (आधुनिक कवि)

है संयोग वियोग-विमिश्रित, माधव ग्रीष्मान्तक है।
जीवन मृत्यु मुखापेक्षी है, सुख सब दुःखान्तक है॥

—उदयशंकर भट्ट (तक्षशिला)

सुख तो थोड़े से पाते,
दुख सब के ऊपर आता;
सुख से वंचित बहुतेरे,
बच कौन दुखों से पाता,
हर कलिका की किस्मत में,
जग-जाहिर, व्यर्थ बताना;
खिलना न लिखा हो लेकिन,
है लिखा हुआ मुर्झाना।

—हरिवंशराय बच्चन (अभिनव सोपान)

दुख पाकर ही क्या न सभी जग में सुख पाते ?
कंटक-हीन प्रसून बहुत कम देखे जाते।

—रामखेलावन वर्मा (चन्द्रगुप्त मौर्य)

सूर सुख्ख अरु दुख्ख को, दोउ सम गिणो विचार।
जेतां जुग मंइ चांदणों, तैतो पंख अंधार॥

—उदैराज

दुर्दिन में वे ही दुख बनते, सुदिनों में सुख जो रहते।
शरद् के शीत हर साधन ही, ग्रीष्म में अंगार बन दहते॥

—ताराचन्द हारीत (दमयंती)

शरीर का आनन्द ही जीवन का असली सुख है मधु-विवाह उसकी चहारदीवारी। जब तक असली सुख की प्राप्ति न हो, तब तक नारी का समर्पण एक खेल है। तुम मानो चाहे न मानो मधु; पर भोग ही सन्तुष्टि है, किसी की आँख उसे नहीं देख सकती, किसी की जिह्वा उसे कलंक नहीं कह सकती।

—शरण (सोना माटी)

सुख चाहे जिस लोक में हो प्रकृति के नियमों से बंधा होने के कारण नाशवान है।

—विवेकानंद (उत्तिष्ठत, जाग्रत)

सुख सर्वत्र विद्यमान है। उसका स्रोत हमारे हृदयों में है।

—रस्किन

भूमा ही सुख है, अल्प में सुख नहीं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (दिन)

पराधीन सपनहुं सुख नाहीं।

—तुलसीदास

दूनिया के सुख केवल निर्जीव शव जैसे हैं।

—स्वामी रामतीर्थ

जीवन में सब से महान् सुख किसी वस्तु को त्याग कर चले जाने में है। सब से महान् सुख किसी वस्तु की प्राप्ति में नही वरन् उसके त्याग में है।

—चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

सच्चा सुख बाहर से नहीं मिलता, अन्तर से मिलता है।

—महात्मा गांधी

सुख, जो कुछ तुम त्याग कर सकते हो उस पर आधारित है, जो कुछ तुम पा सकते हो उस पर नहीं।

—महात्मा गांधी

एक महान् उद्देश्य के लिए प्रयत्न में स्वतः ही आनन्द है, सुख है और किसी अंश तक प्राप्ति की मात्रा भी है।

—जवाहरलाल नेहरू

सुख-भोग-लालसा आत्मसम्मान का सर्वनाश कर देती है।

—प्रेमचन्द (प्रेम पच्चीसी)

सुधारक

उपहास और विरोध तो सुधारक के पुरस्कार हैं।

—प्रेमचन्द

सुधारक चाहे कितना भी श्रेष्ठ पंक्ति का क्यों न हो, जब तक जनता उसे परख नहीं लेगी उसकी बात नहीं सुनेगी।

—विनोबा भावे

जो सुधारक अपने सन्देश के अस्वीकार होने पर क्रोधित हो जाता है उसे सावधानी, प्रतीक्षा और प्रार्थना सीखने के लिए वन में चले जाना चाहिए।

—महात्मा गांधी

सच्चा सुधारक न केवल पाप से घृणा करेगा वरन् उस स्थान को अच्छाइयों से भरने का उत्साहपूर्वक प्रयास करेगा।

—सी० सिमन्स

सुधार

कोई भी सुधार सम्भव नहीं है जब तक कुछ शिक्षित और धनी व्यक्ति स्वेच्छा से निर्धनता का स्तर नहीं अपना लेते।

—महात्मा गांधी

जो मनुष्य अपना सुधार स्वयं कर लेता है। वह लम्बी-चौड़ी बातें करने वाले निर्बल देश भक्तों के समूह से कहीं ज्यादा जनता का सुधार करता है।

—लेवेटर

आवश्यकता दरिद्र का सुधार करती है, सन्तुष्टता धनवान का।

—टेसीटस

सुधार दानशीलता की भाँति घर से शुरू होना चाहिए।

—कार्लाइल

अगर किसी मनुष्य का सुधार करना चाहते हो तो उसकी दाढ़ी से शुरू करो।

—विक्टर ह्यूगो

सुधार आन्तरिक होना चाहिए, बाह्य नहीं। तुम सद्‌गुणों के लिए नियम नहीं बना सकते।

—गिबन

सुधार के उग्र प्रयास सदैव सच्चे सुधार को पीछेधकेलने के कारण हैं।

—विवेकानंद (उत्तिष्ठत, जाग्रत)

सुधार करने के लिए हमें समस्या की तह में घुसना पड़ेगा, चीजों की जड़ तक पहुँचना होगा। इसी को मैं आमूल सुधार कहता हूँ।

—विवेकानंद (उत्तिष्ठत, जाग्रत)

कुछ बिगाड़ न हो तो सुधार क्या हो ? झगड़ा न हो तो मेल का अवसर किधर से आए ?

—जैनेन्द्रकुमार (जैनेन्द्र कहा० भाग ६)

सुदिन

सुदिन सब के लिए आते हैं, किन्तु टिकते उसी के पास हैं जो उन्हें पहचानकर आदर देता है।

—अज्ञात

सुन्दर

जो अहित करने वाली चीज़ है वह थोड़ी देर के लिए सुन्दर बनाने पर भी असुन्दर है; क्योंकि वह अकल्याणकारी है। सुन्दर वही हो सकता है जो कल्याणकारी हो।

—भगवतीचरण वर्मा

सुन्दर स्त्रियाँ गाना और रोना दोनों अच्छी तरह जानती हैं।

—जयशंकरप्रसाद

यदि सुन्दर दिखाई देना है तो तुम्हें भड़कीले कपड़े नहीं पहनना चाहिए बल्कि अपने गुणों को बढ़ाना चाहिए ।

—महात्मा गांधी

विभिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ।
(सुन्दर देह पर सभी कुछ शोभा देने लगता है ।)

—कालिदास

मैंने चमकीले नेत्र, सुन्दर रूप, खूबसूरत मूरत देखी, किन्तु एक भी ऐसी आत्मा नहीं मिली जो मेरी आत्मा से बोलती ।

—एमर्सन

सुन्दरता

स्त्रियों की सुन्दरता के लिए तनिक-सी छाया का आच्छादन आवश्यक है ।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (दर्प हरण)

सौन्दर्य जब सो जाता है तो और भी मादक हो जाता है ।

—शरण (सोना माटी)

हे सौन्दर्य, तू अपने को प्रेम के भीतर ढूंढ, दर्पण की मिथ्या प्रशंसा में नहीं ।

—रवीन्दनाथ ठाकुर (दर्प हरण)

सौन्दर्य सत्य की मुस्कान है जब वह अपनी ही आकृति एक उत्तम दर्पण में देखती है ।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सौन्दर्य जीवन-सुधा है । मालूम नहीं क्यों इसका असर इतना प्राण-घातक होता है ।

—प्रेमचन्द (हार की जीत)

नेत्रों का सुन्दरता से घना सम्बन्ध है।

—प्रेमचन्द

अच्छे विचार रखना भीतरी सुन्दरता है।

—स्वामी रामतीर्थ

वास्तविक सौन्दर्य हृदय की पवित्रता में है।

—महात्मा गांधी

पुरुष! स्वामी बनकर सौन्दर्य सराहना कर, सेवक बनकर आत्म-समर्पण न कर।

—डॉ० रामकुमार वर्मा

सुन्दरता सब जगह काम आने वाली चीज है। तपस्वी सुन्दर क्यों न हो? पंडित जी अपने को सुन्दर क्यों न रखें? कुछ और गुण पीछे भी क्यों न दीखें, सुन्दरता तो सामने से ही दिखायी देती है। उससे काम आसान होता है। सुन्दरता गुण है चाहो तो आयुध भी है।

—जैनेन्द्र (सोच विचार)

सौन्दर्य ईश्वर के ऐश्वर्य का रूप है, सौन्दर्य शक्ति है, सौन्दर्य आदर्श है। वह स्फूर्ति देता है, पवित्रता देता है, बलि की प्रेरणा देता है।

—जैनेन्द्र (जयवर्धन)

सौन्दर्य कहाँ नहीं है? सौन्दर्य परम सत्य है, परम सत्य की अभिन्न विभूति है, सत्य की भाँति सब ठौर व्याप्त है। जिसकी जहाँ आँख है वहाँ ही उसे वह देख लेगा। इसी से अम्बर नीला है। धूप झकझकाती धौली खिलती है, धरती हरी भाती है, रात तारों टकी श्यामल सुहाती है। प्रभात गुलाबी अच्छा लगता है।

—जैनेन्द्र (जैनेन्द्र क० भाग ७)

विचारोत्कर्ष ही सौन्दर्य का रचना शृंगार है। वस्त्राभूषणों से तो उसकी प्राकृतिक शोभा ही नष्ट हो जाती है, वह कृत्रिम और वासनामय हो जाता है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

सौन्दर्य की सबसे महान्, मनोहर और मधुर छवि वह है, जब वह सबल शोक से आर्द्र होता है, वही उसका आध्यात्मिक स्वरूप होता है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

सौन्दर्य प्रतिमा मोहित नहीं करती, वशीभूत कर लेती है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

चित्त की शान्ति ही वास्तविक सौन्दर्य है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

सुन्दरता मनोभावों पर निर्भर होती है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

सौन्दर्य के सामने प्रमुख भीगी बिल्ली बन जाता है। आसुरी शक्ति भी सौन्दर्य के सामने सिर झुका देती है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

सुन्दरता को अलंकारों की जरूरत नहीं। कोमलता अलंकारों का भार नहीं सह सकती।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

स्त्रियों का सौन्दर्य उनका पति प्रेम है। इसके बिना उनकी सुन्दरता इन्दागण का फल है, विषमय और दग्ध करने वाला।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

मैंने कभी सौन्दर्य को वासना की दृष्टि से नहीं देखा। मैं सौन्दर्य की उपासना करता हूँ, उसे अपने आत्म-निग्रह का साधन समझता हूँ उससे आत्मबल संग्रह करता हूँ, उसे अपनी चेष्टाओं की सामग्री नहीं बनाता।

—प्रेमचन्द (प्रेमाश्रम)

द्वैत से अद्वैत को भी इतना आघात नहीं पहुँच सकता, जितना सौन्दर्य को।

—प्रेमचन्द (हार की जीत)

स्वर्ण से भी शीघ्र सुन्दरता चोरों को आकर्षित करती है।

—कहावत

सौन्दर्य और अज्ञान में अपवाद है। सुन्दरी कभी भोली नहीं होती। वह पुरुष के मर्मस्थल पर आसन जमाना जानती है।

—प्रेमचन्द (दंड)

सौन्दर्य तथ्य की सीमा को बाँघ जाता है, उसके हिसाब में कोई आदर्श नहीं है, कोई परिमाण नहीं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य तत्त्व)

सौन्दर्य वहाँ ही है जहाँ इच्छा का इच्छा के साथ योग होता हो, आनन्द का आनन्द के साथ मिलन होता हो।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (प्रार्थना का सत्य)

क्षण प्रतिक्षण जो नवीन दिखाई पड़े वही सुन्दरता का उत्कृष्ट नमूना है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (दर्प हरण)

स्त्रियों की सुन्दरता के लिए जरा-सी छाया का आच्छादन जरूरी है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (दर्प हरण)

बिना सद्‌गुण के सुन्दरता अभिशाप है।

—कहावत

अगर सुन्दरता के साथ सद्‌गुण है, तो वह हृदय का स्वर्ग है, यदि उसके साथ दुर्गुण हैं, तो वह आत्मा का नरक है। वह बुद्धिमान की होली और मूर्ख की भट्टी है।

—क्वार्ल्स

सुन्दरता एक बाल के द्वारा भी हमें अपनी ओर खींच लेती है।

—पोप

सुन्दर वस्तु चिर-आनन्ददायिनी है। उसकी माधुरी नित्य बढ़ती रहती है, उसका कभी ह्रास नहीं होने पाता।

—कीट्स

सुन्दरता विना शृंगार के ही मन मोहती है।

—सादी

सूर्य

सब जीवधारी उत्पत्ति के लिए सूर्य के ऋणी हैं।

—स्वामी रामतीर्थ

सूर्य हर रोज सवेरे आकर हमें उठाता है और कर्तव्य-पथ का संकेत करता है।

—प्रशात

सूर्ये तपत्यावरणाय दृष्टे: कल्पेत लोकस्य कथंतमिस्रा।

(जब सूर्य दीप्तिमान् हो तब लोगों की आँखों के सामने अंधेरा कैसे छा सकता है।)

—कालिदास

सूर्योदय

सूर्योदय में जो नाटक भरा है, सौंदर्य भरा है और जो लीला भरी है वह और कहीं देखने को नहीं मिल सकती।

—महात्मा गांधी

सेना

एक सेना का मुकाबला करना इतना कठिन नहीं, जितना ऐसे गिने-गिनाए व्रतधारियों का, जिन्हें संसार में कोई भय नहीं है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

एक दयालु प्रकृति का मनुष्य सेना में रहकर कितना उद्दण्ड, कठोर हो जाता है। परिस्थितियाँ उसकी दयालुता का नाश कर देती हैं।

—प्रेमचन्द (प्रेमाश्रम)

सेनापति

बड़े कामों में छोटी गलतियों का पकड़ना बड़ा ही सरल है। जैसे मातवर सेनापति फुटकर हारों में ही कुछ मिलाकर अधिक जीतते हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (कुमुदिनी)

सेनापति वही है जो सिपाही की सेवा को अधिकार की वस्तु न समझकर श्रद्धा की वस्तु समझता है।

—अज्ञात

सेवक

नौकर अपने मालिक का रुख देखकर ही काम करता है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

लोग जाति और देश के सेवक तो बनना चाहते हैं, पर जरा भी कष्ट नहीं उठाना चाहते।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

प्रणमत्युन्नतिहेतोः जीवित हेतोर्विमुञ्चति प्राणान्।
दुःखीयति सुखहेतोः को मूढः सेवका दन्यः ॥

(ऊँचा उठने के लिए स्वामी के यहाँ प्रणिपात करता है, जीने के लिए अपने प्राण तक त्यागने को तत्पर रहता है, सुखप्राप्ति के लिए दुःखी रहता है, अतः कहा गया है कि सेवक से बढ़कर और दूसरा कौन मूर्ख हो सकता है?)

—अज्ञात

पावक मैं बसि आँच लगै न, बिना छत खाँड़े कि धार पै धावै,
मीत सों मीत, अमीत अमीत सों, दुक्ख मुखी, सुख मैं दुःख पावै।
जोगी ह्वै आठ हु जाम जगै, अठ जामनि कामनि सौ मनु लावै।
आगिली पाछिली सोचि सबै, फल कृत्य करै तव भृत्य कहावै।

—देव (देवसुधा)

सेवक वही है जो विपत्ति में साथ रहे, जैसे देह की छाया धूप में देह के साथ रहती है।

—अज्ञात

सेवक कर पद नयन से, मुख सों साहिब होइ।
'तुलसी' प्रीति कि रीति सुनि, सुकवि सराहहिं सोइ॥

—तुलसीदास (रामचरित मानस)

समदर्शी मोहिं कह सब कोऊ।
सेवक प्रिय अनन्य गति सोऊ॥

—तुलसीदास (मानस-किष्किन्ध०)

सब तें सेवक-धर्म कठोरा।

—तुलसीदास (मानस-अयोध्या०)

सब के प्रिय सेवक यह नीती।
मोरे अधिक दास पर प्रीती॥

—तुलसीदास (रामचरित मानस)

अपने सेवक से बहुत हिलमिल मत जाओ, शुरू में वह मेल-जोल बढ़ा सकता है। परन्तु अन्त में तिरस्कार को जन्म देगा।

—फुलर

सेवा

फल की सेवा मूल्यवान है, पुष्प की सेवा मधुर है, परन्तु विनीत भक्ति भाव से छाया करने वाली पत्तियों की सेवा के सदृश मेरी सेवा हो।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

वीर-पूजा जैसे वीर बनकर ही हो सकती है वैसे ही गरीबों की सेवा गरीब बन ही हो सकती है।

—विनोबा भावे

गरीबों की सेवा ही ईश्वर की सेवा है।

—सरदार वल्लभभाई पटेल

सेवा धर्म कठिन जग जाना।

—तुलसी दास (मानस-अयोध्या०)

जिसे मेरी सेवा करनी है वह पीड़ितों की सेवा करे।

—गौतम बुद्ध

सेवा मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति है।

—प्रेमचंद

सेवा-हृदय और आत्मा को पवित्र करती है। सेवा से ज्ञान प्राप्त होता है, और यही जीवन का लक्ष्य है।

—स्वामी शिवानंद

त्याग और सेवा ही भारत का जातीय आदर्श है। इसी भाव को पुनः जगा देना चाहिए। बाकी आप ही आप ठीक हो जायगा।

—स्वामी विवेकानन्द

लाखों गूंगों के हृदय में ईश्वर विराजमान है। मैं उसके सिवा अन्य किसी ईश्वर को नहीं मानता।…मैं इन लाखों की सेवा द्वारा उस ईश्वर की पूजा करता हूँ।

—महात्मा गांधी

सेवा है महिमा मनुष्य की, नकि अति उच्च विचार द्रव्यबल।
मूल हेतु रवि के गौरव का, है प्रकाश ही न कि उच्च स्थल॥

—रामनरेश त्रिपाठी (स्वप्न)

दीन-दुखी एवं पीड़ित बन्धुओं की सेवा करने में जो गौरवयुक्त आनंद मिलता है, वह सभ्य समाज की दावतों में न प्राप्त होता है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

रूप के साथ अगर तुम सेवा-भाव धारण कर सको, तो तुम अजेय हो जाओगे।

—प्रेमचन्द (दो सखियाँ)

विश्व में सबसे सुन्दर वस्तु सबसे अधिक बेकार होती है। जैसे मोर और कुमुदिनी।

—रस्किन

सुपात्र

सुपात्र दानाच्च भवेद्धनाड्यो धनप्रभावेण करोति पुण्यम्।
पुण्य प्रभावात्सुरलोक वासी पुनर्धनाढ्य: पुनरेव योगी॥

(सुपात्र को दान देने से पुरुष धनी होता है, धन के प्रभाव से वह पुण्य प्राप्त करता है और पुण्य के प्रभाव से स्वर्ग मिलता है। उसके बाद जन्म-जन्मान्तर में भी मनुष्य धनी और भोगी होता है।)

—अज्ञात

सपुत्र

एकेनापि सुपुत्रेण विद्यायुक्तेन साधुनां।
आह्लादित कुलं सर्वं यथा चंद्रेण शर्वरी॥

(विद्यायुक्त एक ही सुपुत्र से सारा वंश ऐसे आनन्दित हो जाता है जैसे चन्द्रमा से निशीथ।)

—चाणक्य

एकेनापि सुवृक्षेण पुष्पितेन सुगन्धिना।
वासितं स्याद् वनं सर्वं सुपुत्रेन कुलं यथा॥

(एक भी श्रेष्ठ वृक्ष से, जिसमें सुन्दर पुष्प और सुगन्ध है, सारा घर इस प्रकार सुवासित हो जाता है जैसे सुपुत्र से कुल।)

—चाणक्य

एक ही सुपुत्र के कारण सिंहनी वन की महारानी होती है, किन्तु दस कुपुत्रों के होते हुए भी गदही बोझा ढोते-ढोते मर जाती है।

—अज्ञात

एकोऽपि गुणवान्पुत्रो निर्गुणैश्च शतैर्वरः ।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारा: सहस्रशः ।।

(एक ही गुणी पुत्र श्रेष्ठ है, सैंकड़ों गुण रहितों से क्या ? एक ही चन्द्रमा अंधकार नष्ट कर देता है, सहस्र तारे नहीं ।)

—चाणक्य

सुप्रसिद्धि

सुप्रसिद्धि की तृष्णा अगर महान पुरुषों की आखिरी कमजोरी है तो छोटे मनुष्यों की पहली कमजोरी है।

—रस्किन

सुप्रसिद्धि की इच्छा वह इच्छा है जो हरेक महान् व्यक्ति की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है ।

—बर्क

सुभार्या

सुभार्या स्वर्ग की सबसे बड़ी विभूति है जो मनुष्य व चरित्र को उज्ज्वल और पूर्ण बना देती है, जो आत्मोन्नति का मूल मंत्र है ।

—प्रेमचन्द

मानव की सबसे बड़ी सम्पत्ति सुभार्या है ।

—बर्टन

सा भार्या या शुचिर्दक्षा साभार्या या पतिव्रता ।
सा भार्या या पति प्रीता सा भार्या सत्यवादिनी ।।

(वही भार्या है जो पवित्र एवं सुन्दर है, वही भार्या है जो पतिव्रता है, वही भार्या है जिस पर पति की प्रीति है, वही भार्या है जो सत्य बोलती है ।)

—चाणक्य

सुमति

जहाँ सुमति तहँ संपति नाना ।
जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना ॥

—तुलसीदास (मानस-सुन्दर०)

सुलभ

सुलभं वस्तु सर्वस्य न यात्यादरणीय ताम् ।
स्वदार परिहारेण परदारार्थिनो जनाः ॥

(जो वस्तु सुगमता से मिलती रहती है लोग उसका आदर नहीं किया करते । लोग अपनी सुलभ सुन्दर स्त्री को छोड़कर दूसरे की स्त्रियों के पीछे घूमा करते हैं ।)

—अज्ञात

सूक्तियाँ

जीवन भर के कितने अनुभवों का अमृत सूक्ति के एक बिन्दु में रहता है ।

—डॉ० रामकुमार वर्मा

सूक्तियाँ साहित्य-गगन में देदीप्यमान उज्ज्वल नक्षत्र के समान हैं, इनकी आभा देश और काल की संकुचित सीमा पार करके सर्वदा एक और एकरस रहने वाली है ।

—रामप्रताप त्रिपाठी

यदि वाङ्मय को हम हरीतिमा पुंज का रूप देते तो सूक्तियों को हमें सुवासित पुष्प की संज्ञा देनी पड़ेगी । पुष्प जैसे हमारी घ्राण तथा चाक्षुष शक्तियों को आह्लादित करता है वैसे ही सूक्तियाँ हमारे मन तथा मस्तिष्क को पुलकायमान करती हैं ।

—हृदयनारायण सिंह

ज्ञानियों का ज्ञान और युगों के अनुभव सूक्तियों द्वारा सुरक्षित रहते हैं।

—डिजरायली

विधाता की इस मानव-सृष्टि में सूक्तियाँ कल्पतरू के समान हैं। इन की सुविस्तृत सघन छाया में जीवन-पथ की थकान को ही दूर करने की शक्ति नहीं है प्रत्युत भविष्य की दुर्गम यात्रा को सुखपूर्वक समाप्त करने का इनमें अक्षय तथा दैवी सम्बल भी रहता है।

—रामप्रताप त्रिपाठी

सूक्तियाँ सर्वोच्च अभिनन्दन हैं जो तुम किसी लेखक को समर्पित कर सकते हो।

—डॉ० जानसन

सूक्तियों से जीवन की सच्ची परिस्थितियों का मार्मिक अनुभव मिलता है।

—अज्ञात

सूक्तियों में आत्म अनुभूतियाँ भावपूर्ण शब्दों में व्यक्त होती हैं, जिनको बात-बात में हम प्रमाण स्वरूप प्रयोग करते हैं।

—अज्ञात

किसी सुन्दर वाक्य के निर्माण करने वाले के बाद उसकी बारी आती है जो उसका सर्वप्रथम प्रयोग करता है।

—एमर्सन

हरेक सूक्ति भाषा के विस्तार और उसे चिरस्थायी बनाने में सहयोग देती है।

—डॉ० जानसन

वाचालता और कोरी कलम घिसने से देश-सेवा नहीं होती।

—प्रेमचन्द (उपदेश)

आग में कूदने का नाम सेवा नहीं है। उसे दमन करना ही सेवा है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

सच्ची प्रतिष्ठा और सम्मान के लिए सम्पत्ति की जरूरत नहीं। उसके लिए त्याग और सेवा काफी है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

जो अपने घेर वालों की सेवा न कर सका, वह जाति की सेवा कभी कर ही नहीं सकता, घर सेवा की सीढ़ी का पहला डण्डा है। इसे छोड़कर तुम ऊपर नहीं जा सकते।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

सृष्टि

सृष्टि का आवेग रूप दक्ष की कला में आविर्भूत होकर हमारे चित्त को उदास करके विचारों को बाहर ले जाता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (तथ्य और सत्य)

जगत् की सृष्टि का कारण बुद्धिगम्य नहीं है, यह तो स्वयं आत्मा के अनुभव का विषय है। बुद्धि इस गुत्थी को नहीं सुलझा सकती।

—अरविंद घोष

सृष्टि एक व्यापार है, कार्य है।

—जयशंकर प्रसाद

सृष्टि पाप और पुण्य, जड़ और चेतन दोनों के योग से होती है, केवल पुण्य या केवल चैतन्य से कभी सृष्टि का कारखाना चल नहीं सकता।

—अज्ञात

सृष्टि की चरमता कौशल में नहीं है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (सृष्टि)

ईश्वर की सृष्टि रूपी अनोखे चमन में जवानी का सुहावना फूल न खिलता तो कवि बैठे-बैठे ऊँघा करते।

—अज्ञात

सौन्दर्य

सौन्दर्य ही सत्य है और सत्य ही सौन्दर्य है।

—कीट्स

सौन्दर्य शक्ति है और मुस्कान उसकी कृपाण।

—चार्ल्स रीड

सौन्दर्य सौन्दर्य को आकर्षित करता है।

—ले हन्ट

सौन्दर्य वह चीज है जिसकी परिभाषा नहीं हो सकती है, व्याख्या या निरूपण नहीं हो सकता है, जो सर्जनात्मिका कला को अमर आनन्द का स्रोत बना देता है, और जो नैतिक अच्छाई से सर्वथा जुदा वस्तु है।

—अज्ञात

ज्ञानी के लिए सत्य है, भावुक हृदय के लिए सौन्दर्य।

—शिलर

सौन्दर्य और पवित्रता का संयोग क्वचित् ही होता है।

—जुवेनल

सत्य, अच्छाई और सौन्दर्य उसी एक (प्रभु) के विभिन्न रूप हैं।

—एमर्सन

सौन्दर्य को देखने वाले में भी अंशतः सौन्दर्य होता है।

—बोवी

मानव गति सुन्दर वस्तुओं से सुन्दर मनोभावों की ओर, सुन्दर मनोभावों से सुन्दर जीवन की ओर, सुन्दर जीवन से पूर्ण सौन्दर्य की ओर होती है।

—प्लेटो

जब सौन्दर्य रक्त में उबाल पैदा करता है, तब प्रेम मस्तिष्क को बहुत ऊंचा उठा देता है।

—ड्राइडन

यदि नेत्र देखने के लिए बनाए गए हैं, तो सौन्दर्य अपने अस्तित्व के लिए स्वयं बहाना है।

—एमर्सन

सौन्दर्य ही ब्रह्माण्ड का एकमात्र सत्य है।

—अज्ञात

सौन्दर्य प्रेमी का उपहार है।

—कानग्रेव

सौन्दर्य का सर्वोत्तम भाग वह है जिसको कोई चित्र चित्रित न कर सके।

—बेकन

सौन्दर्य का आदर्श सादगी और शांति है।

—गेटे

सौन्दर्य बहुधा सुरा से भी अधिक बुरा है; क्योंकि वह सौन्दर्यवान् और दर्शक दोनों को मदमत्त बना देता है।

—जमीरमन

अच्छाई सौन्दर्य को कितना ऊँचा उठा देती है।

—हन्नामोर

किसी परिचयपत्र की अपेक्षा व्यक्तिगत सौन्दर्य स्वयं एक बड़ी सिफारिश है।

—अरस्तू

मेरे विचार से देखने वाले के मन से अलग होकर सौन्दर्य अपने आप में कुछ है यह प्रतिपादन करना कठिन होगा।

—जैनेन्द्र कुमार (प्रस्तुत प्रश्न)

धीरे-धीरे करके ही सौन्दर्य दूसरे के मन में उतर कर घुलता जाता है। जो चौंकाये वह सौन्दर्य विशेष गहरा नहीं होता है। वह तो अक्सर उतर जाने वाला—घुल रहने वाला पदार्थ है।

—जैनेन्द्र कुमार (सुनीता)

सौन्दर्य का अस्तित्व ही सौन्दर्य का समर्थन है।

—डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

सौन्दर्य प्रेमी को प्रबल भावुकता में ही पूर्ण सन्तोष प्राप्त हो जाता है।

—डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

उज्ज्वल वरदान चेतना का
सौन्दर्य जिसे सब कहते हैं;
जिसमें अनन्त अभिलाषा के
सपने सब जगते रहते हैं।

—जयशंकर प्रसाद (कामायनी)

है यही सौन्दर्य में सुषमा बड़ी,
लौह हिम को आँच इसकी ही कड़ी।
देखने के साथ ही सुन्दर वदन
दीख पड़ता है सदा सुखमय सदन॥

—जयशंकर प्रसाद (कामायनी)

सुन्दर मुख की आँखिन, चाही लाज।
लाज बिना सुन्दरता कौने काज॥
लाज सोभा सुन्दरता को है,
जा की लज्जा सुन्दर सी है॥

—नूर मुहम्मद (अनुराग बाँसुरी)

सेवा का महत्त्व रूप से कहीं अधिक है। रूप मन को मुग्ध कर सकता है, पर आत्मा को आनन्द पहुँचाने वाली कोई दूसरी ही वस्तु है।

—प्रेमचन्द (दो सखियाँ)

सेवा भाव रखने वाली रूप-विहीन स्त्री का पति किसी स्त्री के प्रेम-जाल में फँस जाए, तो बहुत जल्द निकल भागता है, सेवा का चस्का पाया हुआ मन केवल नखरों और चोंचलों पर लट्टू नहीं होता।

—प्रेमचन्द (दो सखियाँ)

सेवा और उपकार बहुधा ऐसे रूप ग्रहण कर लेते हैं, जिन्हें कोई शासन स्वीकार नहीं कर सकता और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उसे उसका मूलोच्छेद करने के प्रयत्न करने पड़ते हैं।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

जाति-सेवा ऊसर की खेती है, वहाँ बड़े से बड़ा उपहार जो मिल सकता है, वह है गौरव और यश, पर वह भी स्थायी नहीं, इतना अस्थिर कि क्षण-भर में जीवन भर की कमाई पर पानी फिर सकता है।

—प्रेमचन्द (माँ)

सेवा-मार्ग भक्ति से भी ऊँचा है।

—अज्ञात

सेवा से शत्रु भी मित्र हो जाता है।

—अज्ञात

बंधुभाव से की हुई सेवा की अपेक्षा आत्मभाव से की हुई सेवा उत्तम है।

—अज्ञात

अपनी और विश्व की सर्वोत्तम सेवा इसीमें है, तुम सदैव पवित्र विचार रखो।

—अज्ञात

सेवा करने की योग्यता रखना दंड नहीं, भगवान् का आशीर्वाद है।

—अज्ञात

उत्तम देश, काल और पात्र के प्राप्त होने पर जो न्यायानुकूल सेवा की जाती है, वही सेवा महत्त्वपूर्ण होती है।

—अज्ञात

प्रेम करने की योग्यता सबमें है, लेकिन सेवा करने की शक्ति किसी को ही मिलती है।

—अज्ञात

सब की सेवा न पराई
वह अपनी सुख संसृति है;
अपना ही अणु-अणु कण-कण
द्वयता ही तो विस्मृति है।

—जयशंकर प्रसाद (कामायनी)

मनुज-सेवा का व्रत लो देव
स्वयं की सत्ता का कर ज्ञान,
और फिर देखो केवल एक
न पाओगे असंख्य भगवान्।

—गोपालदास 'नीरज' (दो गीत)

खल स्वामी-सेवा-सहवासा। अहि फण तल जनु दादुर वासा।।

—द्वारकाप्रसाद मिश्र (कृष्णायन)

चाहै कुटी अति घने वन में बनावै;
चाहै बिना नमक कुत्सित अन्न खावै।
चाहै कभी नर नए पट भी न पावै;
सेवा प्रभो! पर न तू पर की करावै।।
जो आत्म भाव अपना गिरि से गिरावै;
मानापमान कुछ भी मन में न लावै।
जो शीश नीच-नर सम्मुख भी झुकावै;
सेवा वही कर, किसी विध पार पावै।।

—महावीरप्रसाद द्विवेदी

सेइय नृप गुरु तिय अनल, मध्य भाग जग माँहि।
है विनास अति निकट ते, दूर रहे फल नाँहि॥

—बृन्द (बृन्द सतसई)

जो लोग सेवा-भाव रखते हैं और स्वार्थ-सिद्धि को जीवन का लक्ष्य नहीं बनाते उनके परिवार को आड़ देने वालों की कमी नहीं रहती।

—प्रेमचन्द

सेवा के लिए पैसे की जरूरत नहीं होती, जरूरत है अपना संकुचित जीवन छोड़ने की, गरीबों से एकरूप होने की।

—विनोबा भावे

जहाँ रूप, यौवन, संपत्ति और प्रभुता तथा स्वाभाविक सौजन्य प्रेम का बीज बोने में अक्षत कार्य रहते हैं, वहाँ प्रायः उपकार का जादू चल जाता है। कोई हृदय ऐसा वज्र और कठोर नहीं हो सकता जो सत् सेवा से द्रवीभूत न हो जाय।

—प्रेमचन्द

सेवा उसकी करो जिसे सेवा की जरूरत है। जिसे सेवा की जरूरत नहीं उसकी सेवा करना ढोंग है, दम्भ है।

—महात्मा गांधी

निष्ठावंत और निष्काम सेवा ज्यादा दिन एकाकी नहीं रहने पाती।

—विनोबा भावे

सेवा में वृत्ति जितनी निरहंकार रहेगी उतनी सेवा की कीमत बढ़ेगी।

—विनोबा भावे

सेवा ही वास्तविक संन्यास है। संन्यासी केवल अपनी मुक्ति का इच्छुक होता है। सेवा व्रतधारी अपने को परमार्थ की वेदी पर बलि दे देता है।

—प्रेमचन्द

गृहस्थी में फँसकर कोई तन-मन से सेवा-कार्य नहीं कर सकता।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

उत्साही युवकों का ऊँचे आदर्शों के साथ सेवा-क्षेत्र में आना जाति के लिए सौभाग्य की बात है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

जनता पर उसी आदमी का असर पड़ता है, जिसमें सेवा का गुण हो।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

सार्वजनिक काम करने के लिए कहीं भी क्षेत्र की कमी नहीं, केवल मन में निःस्वार्थ सेवा का भाव होना चाहिए।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

जाति सेवकों से सभी दृढ़ता की आशा रखते हैं, सभी उसे आदर्श पर बलिदान होते देखना चाहते हैं। जातीयता के क्षेत्र में आते ही उसके गुणों की परीक्षा अत्यन्त कठोर नियमों से होने लगती है और दोषों की सूक्ष्म नियमों से। पहले सिरे का कुचरित्र मनुष्य भी साधुवेश रखने वालों से ऊँचे आदर्श पर चलने की आशा रखता है और उन्हें आदर्श से गिरते देखकर उनका तिरस्कार करने में संकोच नहीं करता है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

सेवा ही वह सीमेण्ट है, जो दम्पति को जीवनपर्यन्त स्नेह और साहचर्य में जोड़े रख सकता है, जिस पर बड़े-बड़े आघातों का भी कोई असर नहीं होता। जहाँ सेवा का अभाव है, वहीं विवाह-विच्छेद है, परित्याग है, अविश्वास है।

—प्रेमचन्द (गोदान)

जातीय सेवा का स्वर्गीय आनन्द सहज ही में नहीं मिल सकता। हमारा पुरुषत्व, हमारा मनोबल, हमारा शरीर, यदि जाति के काम न आए तो वह व्यर्थ है।

—प्रेमचन्द (उपदेश)

सेवा मनुष्य की वास्तविक वृत्ति है। सेवा ही उसके जीवन का आधार है।

—प्रेमचन्द (आधार)

सैनिक

सैनिक केवल एक यंत्र है जिसकी गति का निर्णय उसके नायक को है। सैनिक जीवन और मृत्यु में कोई अन्तर नहीं समझ सकता।

—डॉ० रामकुमार वर्मा

सैनिक केवल इसलिए जीवित है कि नायक की आज्ञा से मृत्यु प्राप्त कर सके। इससे अधिक सैनिक का कोई अधिकार नहीं है।

—डॉ० रामकुमार वर्मा

सौभाग्य

सौभाग्य उन्हीं को प्राप्त होता है, जो अपने कर्त्तव्य-पथ पर अविचल रहते हैं।

—प्रेमचन्द

सच्चा सौभाग्य, सच्ची समृद्धि तो आत्मिक वैभव, आत्मिक पूर्णता का आत्मिक ज्ञान ही है।

—स्वेट मार्डन

सौभाग्य वीर से डरता है और सिर्फ भीरु को भयभीत करता है।

—सेनेका

रत्ती भर साहस मनों सौभाग्य से अच्छा है।

—जे० ए० गारफील्ड

स्त्री

ज्यों ज्यों समाज में स्त्री का स्थान नीचे उतरता जाता है, त्यों त्यों स्त्री और पुरुष दोनों के जीवित रहने का काल भी बराबर होता जाता है।

—शरच्चन्द्र (नारी का मूल्य)

स्त्री जाति को कभी खाली हाथ नहीं बैठना चाहिए।

—शरच्चन्द्र (दत्ता)

स्त्रियाँ जब श्रद्धा भक्ति करने लगती हैं तो शिकायत नहीं करतीं। देवी-देवता भी कम कष्ट नहीं देते, फिर भी वे पूजा बन्द नहीं करतीं, कहती हैं, 'दुःख उन्होंने अच्छे के लिए ही दिया है।'

—शरच्चन्द्र (विप्रदास)

पुरुषों के लिए चकमा देने का मार्ग खुला है, किन्तु जिसे कहीं, कभी किसी प्रकार छुटकारे का मार्ग नहीं है, वह है केवल स्त्री। इसी से सतीत्व की महिमा का प्रचार ही विशुद्ध साहित्य हो उठा है।

—शरच्चन्द्र (साहित्य में आर्ट-दुर्नीति)

स्त्री का एक प्रकार का रूप होता है, जिसे यौवन के दूसरे किनारे पर पहुँचे बिना पुरुष कभी किसी दिन नहीं देख पाता।

—शरच्चन्द्र (देना पावना)

भगवान् पर भरोसा रखने के लिए जितना बल चाहिए, उतना बल स्त्रियों की देह में होगा।

—शरच्चन्द्र (बिराज बहू)

जिस प्रकार स्त्री के दैहिक सौन्दर्य के समान सुन्दर वस्तु इस विश्व में नहीं है, उसी प्रकार इसकी विकृति के समान असुन्दर वस्तु भी शायद ही पृथ्वी पर कोई हो।

—शरच्चन्द्र (शेष प्रश्न)

स्त्रियों की जिम्मेदारी यह है कि मुँह से तो उनकी हाँ में हाँ मिला देना और काम के समय चलना अपने मतानुसार।

स्त्रियों के स्निग्ध हाथों का स्पर्श मौजूद नही तो पुरुषों के रोजमर्रा की जिन्दगी और उसकी आवश्यकताओं में रस ही न रहे, सब का सब नीरस और श्रीहीन हो जाय।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (दो बहनें)

नारी की झाईं परत, अन्धा होत भुजंग।
कबिरा तिनकी कौन गति, नित नारी के संग।।

—कबीर

स्त्रियों की मान हानि साक्षात् लक्ष्मी और सरस्वती मान हानि है।

—निराला

पुरुष शस्त्र से काम लेता है, स्त्री कौशल से।

—प्रेमचन्द

स्त्री सब कुछ कर सकती है, मगर अपनी इच्छा के विरुद्ध प्रेम नहीं कर सकती।

—सुदर्शन

मेरे मत में स्त्री को घर छोड़ कर घर की रक्षा के निमित्त कन्धे पर बन्दूक धरने के लिए आह्वान करने अथवा उसके लिए उसे प्रोत्साहित करने में स्त्री और पुरुष दोनों का ही पतन है।

—महात्मा गांधी

स्त्री जिस समय तू अपने गृह कार्य में लीन रहती है उस समय तेरे शरीर से ऐसी मधुर रागिनी निकलती है जैसे छोटे-छोटे पत्थरों के टुकड़ों के साथ पर्वत-स्रोत के क्रीड़ा करने से निकलती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सुशीला रमणी ईश्वर का सबसे उत्तम प्रकाश है, जो इस संसार की शोभा बढ़ा रहा है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

स्त्रियों का जीवन ऐसा होता है कि वे अपने स्वभाव की भयंकरता को छिपा सकती हैं और बाहर से अपनी तीखी वाणी को मधुर भी बना सकती हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

स्त्री पृथ्वी की भाँति धैर्यवान् है, शान्ति-सम्पन्न है, सहिष्णु है।

—प्रेमचन्द

स्त्री का बल और साहस, मान और मर्यादा पति तक है। उसे अपने पति के ही बल और पुरुषत्व का घमण्ड होता है।

—प्रेमचन्द

स्त्री जगत की एक पवित्र स्वर्गीय ज्योति है। वह पुरुष शक्ति के लिए जीवन सुधा है।···त्याग उसका स्वभाव, प्रदान उसका धर्म, सहनशीलता उसका व्रत और प्रेम उसका जीवन है।

—आचार्य चतुरसेन शास्त्री

स्त्री-जाति में हर उम्र में मातृत्व का अंश रहता है, और वही अंश उनमें सहिष्णुता, क्षमा और स्नेह को प्रेरित करता है, दुःख को कम करने की शक्ति लाता है; और इसीसे उनका दिग्विजय इतना सरल हो जाता है।

—क० म० मुन्शी

सुन्दर और सच्चरित्र स्त्री ईश्वर की उत्कृष्ट कारीगरी, देवताओं की वास्तविक शोभा, पृथ्वी का अपूर्व चमत्कार तथा संसार का एकमात्र आश्चर्य है।

—हरमोज

काम क्रोध लोभादि मद, प्रबल मोह कै धार।
तिन महं अति दारुन दुःखद, माया रूपी नारि॥

—तुलसीदास

तुम अजस्त्र वर्षा सुहाग की, और स्नेह की, मधुर रजनी।
फिर अतृप्त जीवन यदि था, तो उस में सन्तोष बनी॥
नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में॥

—जयशंकर प्रसाद

यह लौकिक पुरुष के अत्याचार का बहुत निर्बल बहाना है कि स्त्री का सद्गुण सच्चरित्रता और आज्ञाकारिता है।

—डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

स्त्री को पराजित करना हो तो उसकी प्रशंसा करो।

—वृन्दावनलाल वर्मा

स्त्री से पुरुष को छुट्टी नहीं मिल सकती। जब तक पुरुष है, वह अधूरा है, इसलिए मैं विवाह को अनिवार्य धर्म मानता हूँ। पुरुष रहे और स्त्री से निरपेक्ष रहे, यह असत्य है। निरर्थक नहीं यह अनर्थक है। स्त्री हो और पुरुष को उपेक्षा देकर वह जीये, यह असम्भवता है, अकृतार्थता है।

—जैनेन्द्र (सोच-विचार)

स्त्री-पुरुष दोनों अपने में अधूरे हैं। पूर्ण अर्ध-नारीश्वर है। इससे पुरुष स्त्री में न खोये यह असम्भव नहीं है।

—जैनेन्द्र (इतस्ततः)

स्त्री-पुरुष के बीच आकर्षण तो है। वह वैज्ञानिक तथ्य है। आप उससे नाराज़ हों और लड़ें या प्रसन्न हो और सराहें, यह आपके वश की बात नहीं है कि उसे मिट दें। फिर ब्रह्मत्व को साधने वाली वह ब्रह्म की चर्चा क्या है ?

—जैनेन्द्र (इतस्ततः)

स्त्री और पुरुष के मध्य जो आकर्षण है वह परस्पर उन्हें आत्मदान में मिलाये बिना रह नहीं सकता। यह आत्म-विसर्जन और आत्मदान की अनिवार्यता मूलगत और टिकनेवाली है। यह सब मनुष्य पर है कि उसे अध्यात्म वृत्ति से लेकर उपयोगी करे या तिरस्कार के भाव से अवहेलित करे।

—जैनेन्द्र (इतस्ततः)

पुरुष को स्त्री चढ़ायेगी, चढ़ाते जायेगी, यहाँ तक कि यों चाहे दुर्लभ पड़कर वह स्त्री के लिए खो ही जाये। लेकिन मुड़ने स्त्री उसे नहीं देगी। भोग ले सकती है, फिर भी अपने समक्ष और आगे उसे ढेलते जाने के धर्म से स्त्री विमुख नहीं हो सकती।

—जैनेन्द्र (जयवर्धन)

स्त्री की लगन स्थूल की ओर विशेष रहती है। सूक्ष्म की लगन प्रतिभा कहेलाती है।

—जैनेन्द्र (प्रस्तुत प्रश्न)

स्त्री इसलिए नहीं है कि पुरुष को अपनी ओट ले। उसकी कृतार्थता इसमें है कि वह पुरुष को आगे उत्तरोत्तर करें। वह पीछे रहने को है इसलिए कि किसी भाँति पुरुष पीछे न हो पाए।

—जैनेन्द्र (जयवर्धन)

स्त्रा क्या चाहती है ? अधीनता और स्वतंत्रता। शायद एक साथ दोनों चाहती है। स्वतंत्र होकर किसी को अपने अधीन रखना और पूरी अधीन होकर किसी को अपने ऊपर सर्वथा स्वतंत्र पाना।

—जैनेन्द्र (जयवर्धन)

पुष्टि-बल में मनुष्य को प्रबल मान भी लो पर वाक्-बल में स्त्री के आगे मनुष्य कोई भी चीज नहीं है।

—जैनेन्द्र (काम, प्रेम, परिवार)

स्त्रियों का वास्तविक मूल्य तो उस समय था जब वे पुरुषों के मुख से 'देवी' सम्बोधन सुनकर ही गद्‌गद् नहीं हो पाती थीं, बल्कि वह पुरुष को मुख से कही हुई बात कार्यरूप में परिणत करने के लिए विवश करती थीं।

—शरच्चन्द्र (नारी का मूल्य)

मणि-माणिक्य बहुत मूल्यवान वस्तुएँ हैं; क्योंकि वे दुष्प्राप्य हैं। इस हिसाब से स्त्री का मूल्य अधिक नहीं है; क्योंकि यह विश्व में दुष्प्राप्य नहीं है।

—शरच्चन्द्र (नारी का मूल्य)

स्त्रियों का मूल्य क्या है ? अर्थात् वे कहाँ तक सेवा-परायण, स्नेहशील, सती और दुःख तथा कष्ट सहते हुए मौन रहती हैं, अर्थात् उनके द्वारा पुरुष को कहाँ तक सुख और सुभीता हो सकता है और कहाँ तक वे रूपसी हैं ? हम यह बात पृथ्वी का इतिहास खोलकर प्रमाणित कर सकते हैं कि स्त्रियों का मूल्य निश्चित करने के लिए इसके सिवा और कोई मार्ग है ही नहीं।

—शरच्चन्द्र (नारी का मूल्य)

प्यार के खातिर स्त्री सब कुछ करने को तैयार हो जाती है, परन्तु प्रतिकार के लिए उससे भी अधिक भयानक कर्म बैठती है।

—सुदर्शन

सुयोग्य स्त्री परिवार की शोभा तथा गृह की लक्ष्मी है।

—मनुस्मृति

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
(जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ अवश्यमेव देवता वास करते हैं।)

—मनुस्मृति

स्त्री प्रकृति की सुन्दर भूलों में है।

—काउले

सद्गुणी स्त्री जहाँ कहीं भी मिलती है वहाँ आपको आनन्द मिलता है। उस की चितवन में बहुत सुन्दर बगीचा है और उसका मन सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी पुस्तक है।

—काउले

साध्वी स्त्री विश्व की सर्वोत्तम वस्तु है।

—लावेल

स्त्रियों की उन्नति अथवा अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति अथवा अवनति निर्भर है।

—अरस्तू

स्त्रियों की संगति अच्छे स्वभाव की आधारशिला है।

—गेटे

सम्पूर्ण महान् कार्य के आरम्भ में किसी स्त्री का हाथ रहा है।

—लामार्टिन

स्त्री एक अनिवार्य आपत्ति, स्वाभाविक मोह, वांछनीय विपदा, घरेलू भय, प्राणघातक आकर्षण, बाहर से मधुर और भीतर से विष रस भरे स्वर्ण घट के समान है।

—सेंट क्रिस्टोस्टम

रूपवती स्त्री नयनाभिराम होती है, बुद्धिमती स्त्री हृदय को खुश रखती है। एक अनमोल रत्न है तो दूसरी रत्न-राशि।

—नैपोलियन

स्त्री कांटेदार झाड़ी को फूल बनाती है, निर्धन से निर्धन व्यक्ति के घर को भी सुशीला स्त्री स्वर्ग बना देती है।

—गोल्डस्मिथ

स्त्री तुम्हारी छाया के समान है। उसका पीछा करो, वह भागेगी। उससे भागो, वह आपका पीछा करेगी।

—कैम्फोर्ट

दुर्बलता तेरा ही नाम स्त्री है।

—शेक्सपियर

प्रतिशोध लेने में और प्रेम में स्त्री पुरुष से अधिक निर्दयी होती है।

—नीत्शे

एक निकृष्ट स्त्री से बढ़कर कोई बुराई नहीं है और अच्छी स्त्री की अपेक्षा आज तक कोई अच्छाई पैदा नहीं हुई।

—यूरोपिडीज

सौन्दर्य स्त्रियों को प्रायः अभिमानी बनाता है, सद्‌गुण उन्हें अति प्रशंसनीय बनाता है और विनय से वे देव तुल्य हो जाती हैं।

—शेक्सपियर

स्त्री प्रेम करती है या घृणा, वह इनके बीच की स्थिति नहीं जानती।

—साइरस

पुरुष के सारे तर्क स्त्री के एक भाव की तुलना नहीं कर सकते।

—वालटेयर

स्त्री का गुण रूप में है और कुल शील में,
पद्‌मनी की पंकजता डूबे किसी झील में।

—मैथिलीशरण गुप्त (हिडिम्बा)

सू० को० १२।४

स्त्री और पुरुष का पारस्परिक ध्येय एक है, वे साथ ही साथ प्रगति करते हैं अथवा पतन की ओर जाते हैं, छोटे अथवा देव तुल्य बनते हैं, पराधीन अथवा स्वतन्त्र होते हैं।

—टेनीसन

स्त्री के सम्मान से सभ्यता का परिचय मिलता है।

—जी० डब्ल्यू० कर्टिस

स्त्री-चरित-गति को लहइ ? एकई आखर रस सवई विणास।

—नरपति नाल्ह (वीसलदेव रासो)

तिरिया चरित न कीन्ह विचारा, तिरिया मतै बूड़ संसारा।।
तिरिया जल महँ आग लगावै, तिरिया सूखे नाउ चलावै।।
तिरिया छार पुरुष मुख मेले, तिरिया छल नाटक वहु खेले।।

—कासिमशाह (हंस जवाहिर)

काल कनक अरु कामिनी, परहरि इनका अंग।
दादू सब जग जलि मुवा, ज्यौं दीपक ज्योति पतंग।।

—दादूदयाल (संत सुधासार)

त्रिय जोवन जलनद कौ पानी, उतरि गए को मेलै आगी।
तिरिया जाति दूध की नाँई, विनसे बहुरि सवाद न पाई।।
तिरिया कँवल एम सम तूला, पानी गये न सो रंग फूला।
तिरिया केदल षंभ की नाई, एक बार फर होइ मिट जाई।।
तिरिया माटिक वासन जैसे, पाए छूति रसोई न पैसे।
तिरिया जस माटी की गगरी, माहुर बूंद परत षन विगरी।।
औगुन भरी सो तिरिया, तैसा गुन आधार।
संत करहु चित्त भीतर, जा पुरवहिं करतार।।

—शेखनबी (ज्ञानदीप)

जे स्याने ह्वै जगत मैं त्रिय सों करत पियार।
ताहि महा जड़ समुझिये, चित भीतर निरधार।।

—गुरु गोविन्दसिंह (दशमग्रंथ)

नारि न तजहि मरै भरतारहिं। ता संग सहहिं घनंजय झारहिं।।

—केशवदास (रामचन्द्रिका)

वाँमाँ आगे सोइवा, जम चा भोगेवा, संगे न पीवणा पाणी।

—गोरखनाथ (गोरखबानी)

स्नेह

स्नेह जितना ही गुप्त और जितना ही एकान्त का होता है, उतना ही तेज हुआ करता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (अनाथ)

स्नेह-प्यार की बारीक बातें औरतें चट से समझ जाती हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (दीदी)

स्नेह जितना ही गुप्त और जितना ही एकान्त होता है उतना ही प्रबल हुआ करता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (दीदी)

स्नेह एक ऐसा चिकना और परिव्यापक भाव है कि उसमें व्यक्तित्व नहीं रहते। स्नेही अपने स्नेह-पात्र को कभी याद नहीं करता; क्योंकि वह उसे कभी भूलता नहीं, वह उससे इतना अभ्यस्त हो जाता है कि उसे कभी ध्यान नहीं होता।

—अज्ञेय (शेखर : एक जीवनी, भाग-१)

घर वालों का स्नेह डाक्टर की दवाओं से कहीं ज्यादा लाभदायक होता है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

ग्रामीण जीवन में एक प्रकार का स्नेह बन्धन होता है, जो सब प्राणियों को, चाहे छोटे हों या बड़े, बाँधे रहता है।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

संसार के सारे नाते स्नेह के नाते हैं। जहाँ स्नेह नहीं वहाँ कुछ नहीं।

—प्रेमचन्द (निर्मला)

पारस्परिक स्नेह और सहृदयता भी ग्राम्य जीवन का एक शुभ लक्षण है।

—प्रेमचन्द

स्नेह वार-वार कष्ट देने की ही अपेक्षा रखता है।

—प्रेमचन्द

स्नेह के कारण ही मानव विषयों में फँसता है और अनेकों प्रकार के कष्ट भोगने लगता है।

—महाभारत

आप अपने स्नेह को अपने शब्दों में भी व्यक्त कीजिए। अपने स्नेह का पूर्ण प्रदर्शन किए विना आप अपना स्नेह-भाव दूसरों तक नहीं पहुँचा सकते।

—स्वेट मार्डन (चीयरफुलनैस)

स्मरण-स्मृति

स्मृति वह पुजारिन है जो वर्तमान को समाप्त कर अपना मृतक भूत की मूर्ति पर अर्पित कर देती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

दुःख में सुमिरन सब करैं, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुःख काहे होय।।

—कबीर

सुमिरन सुरत लगाइ कै, मुख तें कछू न बोल।
बाहर पट देइ के अन्तर के पट खोल॥

—कबीर

मधुर स्मृति किसी स्वर्गीय संगीत की भाँति जीवन के तार-तार में व्याप्त रहती है।

—प्रेमचन्द (दो सखियाँ)

मरने वाले की याद (स्मृति) रुलाने के लिए काफी है।

—प्रेमचन्द (निर्मला)

जब हम विज्ञान द्वारा मन के गुप्त रहस्य जान सकते हैं, तो क्या अपने पूर्व संस्कार न जान सकेंगे। केवल स्मृति को जगा देने ही से पूर्व जन्म का ज्ञान हो जाता है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

अतीत मोह दुःखद ही क्यों न हो, उसकी स्मृति मधुर होती है।

—प्रेमचन्द (धिक्कार)

स्मरण की सच्ची कला ध्यान की कला है।

—सैमुएल जानसन

स्मृति मस्तिष्क का खजांची है।

—कहावत

स्वच्छता

दरिद्रता धीरतया विराजेत।
कुवस्त्रता शुभ्रतया विराजते॥

(दरिद्रता भी धैर्य से शोभित होती है, स्वच्छता से कुवस्त्र भी अच्छा लगता है।)

—चाणक्य

स्वच्छता और श्रम मनुष्य के सर्वोत्तम वैद्य हैं।

—रोमसिन

स्वच्छता फटे-पुराने वस्त्रों में भी सौन्दर्य ला देती है।

—अज्ञात

स्वतन्त्र

परमात्मा अनादि है, स्वतन्त्र और समदर्शी है, अतः मानव-मात्र स्वतन्त्र, स्वयं दृष्टा है, और इसीलिए स्वतन्त्रता मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है।

—विपिनचन्द्र पाल

स्वतन्त्र वही हो सकता है जो अपना काम आप कर लेता है।

—विनोबा भावे

मानव जन्म से स्वतन्त्र है, किन्तु वह सब जगह जंजीरों से जकड़ा हुआ है।

—रूसो

वह मनुष्य स्वतन्त्र नहीं है जो स्वयं अपना स्वामी नहीं है।

—इपिक्टेटस

स्वतन्त्रता

आजादी का इतिहास, कहीं काली स्याही लिख पाती है?
इसके लिखने के लिए खून की नदी वहाई जाती है।

—गोपालप्रसाद व्यास (कदम-कदम बढ़ाए जा)

स्वातन्त्र-तुल्य अति ही अनमूल्य रत्न;
देखा न और, बहु बार किया प्रयत्न।
स्वातन्त्र्य में नरक बीच विशेषता है;
न स्वर्ग भी सुखद जो परतन्त्रता है॥

—महावीरप्रसाद द्विवेदी

है स्वतन्त्रता की भी सीमा, नदी कूल के बाहर हो,
नागिन बन विनाश फैलाती पूर्व मान-मर्यादा खो,
जल, परिमित हो, विविध कटोरोंके बंधन में आता जब,
जलतरंग मीठी-स्वर-लहरी, छेड़ छाड़ उपजाता तब ।

—गुरुभक्तसिंह भक्त (विक्रमादित्य)

प्राणों पर इतनी ममता
औ स्वतन्त्रता का सौदा ?
बिना तेल के दीप जलाने
का है कठिन मसौदा !
आँसू बिखराते बीतेंगी
जलती जीवन - घड़ियाँ
बिना चढ़ाये शीश नहीं
टूटेंगी माँ की कड़ियाँ !
दुनिया में जीने का सबसे
सुन्दर मधुर तकाजा ।
ऐ शहीद ! उठने दे
अपना फूलों भरा जनाजा ।।

—सोहनलाल द्विवेदी (भैरवी)

जंजीरों में चले बाँधने, आजादी की राह।
घी से आग बुझाने की, सोची है सीधी राह !
हाथ पाँव जकड़ो जो चाहो, है अधिकार तुम्हारा ।
जंजीरों से कैद नहीं, हो सकता हृदय हमारा ।।

—सोहनलाल द्विवेदी (भैरवी)

नहीं चाहते हम धन-वैभव, नहीं चाहते हम अधिकार ।
बस स्वतन्त्र रहने दे हमको, और स्वतन्त्र रहे संसार ।।

—मैथिलीशरण गुप्त (अर्जन और विसर्जन)

भीम और अर्जुन के पुत्रो, बने हुए हो दास।
ऐसे पराधीन जीवन से, मधुर मृत्यु का पाश।
जीना हो तो जियो आज बनकरस्वतन्त्र हे वीर!
नहीं, समा जाओ नीचे पृथिवी की छाती चीर!

—सोहनलाल द्विवेदी (युगाधार)

हे बद्धकीर, सुख पाकर भी अखण्ड,
चिन्ता अरण्य गृह की करके प्रचण्ड।
मानो दिया जगत को तुमने बता है,
होती समस्त सुख-मूल स्वतन्त्रता है॥

—मैथिलीशरण गुप्त

स्वतन्त्र देश के महान् सैनिको, स्वतन्त्रता चली न जाय हाथ से,
महान् यश लगा हुआ किरीट में, किरीट भी उतर न जाय माथ से।

—देवराज दिनेश (भारत की माँ लोरी)

स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।

—तिलक

स्वतन्त्रता जन्मसिद्ध हक नहीं, कर्मसिद्ध हक है।

—विनोबा

स्वतन्त्रना के विजय-नाद एक दिन में नहीं प्राप्त किये जाते, क्योंकि स्वतंत्रता की देवी बड़ी कठिनाई से सन्तुष्ट और तृप्त होती है। वह भक्तों की कठोर एवं दीर्घकालव्यापी तपस्या चाहती है, और परीक्षा लेती है।

—सुरेन्द्रनाथ बनर्जी

स्वतन्त्रता एक व्यक्तिगत विपय ही नहीं है, अपितु एक सामाजिक ठेका है। यह स्वार्थों की सुविधा है।

—ए० जी० गार्डनर

स्वतंत्रता का वृक्ष सिर्फ आततायियों के रक्त से सींचने पर पनपता है।

—बरेरे

स्वतंत्रता का मूल्य निरन्तर सावधानी है।

—जे० पी० कुरल

जो दूसरों को स्वतंत्रता से वंचित रखते हैं वे स्वयं उसके अधिकारी नहीं हैं और न्यायप्रिय भगवान् के शासन में उसको बहुत दिनों तक नहीं रख सकते।

—लिंकन

स्वतंत्रता राष्ट्रों का शाश्वत यौवन है।

—अज्ञात

मुझे स्वतंत्रता दो अथवा मृत्यु।

—पेट्रिक हेनरी

जब स्वतंत्रता चली जाती है तब जीवन निस्तेज हो जाता है, उसमें कोई उत्साह नहीं रहता।

—एडीसन

जिस भगवान् ने हमें जीवन दिया है, उसने उसी समय हमें स्वतंत्रता भी दी है।

—जेफरसन

सुरक्षा के लिए स्वतंत्रता को भी सीमित होना चाहिए।

—बर्क

स्वदेश-प्रेम

यदि आपको अपने देश से प्रेम नहीं है तो आप देश की त्रुटियों का संशोधन नहीं कर सकते।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (गोरा)

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिस में रस धार नहीं।
वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिस में स्वदेश का प्यार नहीं॥

—मैथिलीशरण गुप्त

सुधार से बढ़कर स्वदेश-प्रेम है। जब हम लोगों का मत एक होगा, विचार एक होंगे तब समाज-सुधार अपने आप हो जाएगा।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (गोरा)

जिसको न निज गौरव तथा, निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं पशु है निरा, और मृतक समान है॥

—राजेन्द्र देव सेंगर (सारन्ध्रा)

स्वदेशी

स्वदेशी का व्रत तो सदा ही पालना है, द्वेष या वैर भाव से नहीं, बल्कि अपने प्यारे देश के प्रति कर्त्तव्य-बुद्धि से प्रेरित होकर पालना है।

—महात्मा गांधी

ग्राम-ग्राम में ग्रन्थागार, करें ज्ञान-गुण का विस्तार।
बढ़े हिन्द हिन्दी पर प्यार, भरें राष्ट्र भाषा भण्डार॥
फैलाओ हिन्दू साहित्य, युग-युग का सहचर निज नित्य।
निज भू निज भूषा निज वेष, निज भाषा निज भाव अवशेष॥

—मैथिलीशरण गुप्त (हिन्दू)

स्वभाव

कठिनाइयों में पड़कर परिस्थिति पर क्रुद्ध होना मानव-स्वभाव है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

प्रकृति बल-प्रयोग सहन नहीं कर सकती।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

काम करना मानवी स्वभाव है।

—प्रेमचन्द (प्रेरणा)

स्वभाव एक उपार्जित गुण है, उसमें शिक्षा और सत्संग से सुधार हो सकता है।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

जिनका स्वभाव अति वेदनाशील है, उनके अपने स्वजन बंध-बांधव भी उनसे बचकर रहते हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (दुःख)

स्त्री के साथ पति के स्वभाव का मेल न होने से शायद प्रेम अच्छा होता है, सूखी मिट्टी के साथ पानी के मेल की तरह।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (संस्कार)

मानवों का यह स्वभाव है कि वह दूसरों को अपने से अधिक सुखी समझते हैं और स्वयं वैसा ही होना चाहते है।

—सुकरात

मनुष्य स्वभाव निम्न व पतित होने की अपेक्षा उच्च व दिव्य है।

—रस्किन (विजय पथ)

पावक को जल-विन्दु निवारक सूरज ताप कूं छत्र लियो है।
व्याधि कूं वैद तुरंग को चाबुक चौपग कूं ब्रख दंड दियो है।।
हस्ती महामद को किय अंकुस भूत पिसाच कूं मंत्र कियो है।
ओखद है सबको सुखकारी स्वभाव को ओखद नांहि कियो है।।

—गंग (अकबरी दरबार)

मनुष्य की सच्ची प्रकृति ईश्वरत्व है।

—रामतीर्थ

आत्मा का स्वभाव सुख-दुःख से अछूते रहता है। उस स्वभाव तक मनुष्य को पहुँचना है।

—महात्मा गांधी

कोटि जतन कोऊ करै, परै न प्रकृतिहि वीच।
नल-वल जल ऊँचो चढ़ै, अन्त नीच को नीच।।

—बिहारी

रहिमन लाख भलि करो अगुनी अगुन न जाय।
राग सुनत पय पियत हूँ, साँप सहज धरि खाय।।

—रहीम

मनुष्य का स्वभाव ही है तनिक-सा दोष देखते ही, कुछ क्षण पूर्व की सभी बातें भूलते उसे कितनी देर लगती है।

—शरच्चन्द्र (श्रीकान्त)

स्वराज्य

जैसे माता बच्चे को उठने के लिए नीचे झुकती है, उसी तरह हमें भी नीचे झुकना चाहिए और नीचे वालों को ऊपर उठाना चाहिए। तभी विषमता मिटेगी और तभी सच्चा स्वराज्य मिलेगा।

—विनोबा भावे

स्वराज्य चित्त की वृत्ति मात्र है। ज्योंही पराधीनता का आतंक दिल से निकल गया, बस स्वराज्य मिल गया। भय ही पराधीनता है, निर्भयता ही स्वराज्य है।

—प्रेमचन्द

स्वराज्य गणेश जी की वह मूर्ति है जिसका निर्माण हमें मिट्टी से करना है।

—विनोबा भावे

स्वराज्य हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है।

—लोकमान्य तिलक

एक भूतल पर हरेक मानव को और मानवों के वर्ग को, स्वशासन का अधिकार है।

—टामस जेफरसन

स्वर्ण

सोने का घूंघट सारी कुरुपता को ढक देता है।

—डैकर

स्वर्ण को हृदय की अपेक्षा हाथ में रखना कहीं अच्छा है।

—फूलर

पक्षी के पंख को स्वर्ण से आभूषित कर दो तो वह आकाश में फिर कभी न उड़ सकेगा।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

स्वर्ग

मन अपने अन्दर ही स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग बना सकता है।

—मिल्टन

जो परोपकार में लीन है, भगवान् में जिसकी आस्था है और जो सत्य का अनुसरण करता है, उसे भूमण्डल ही स्वर्ग है।

—बेकन

जहाँ हमारी सुन्दर कल्पना आदर्श का नीड़ बनकर विश्राम करती है, वहीं स्वर्ग है। वही विहार का, वही प्रेम करने का स्थल स्वर्ग है और वह इसी लोक में मिलता है।

—जयशंकर प्रसाद (स्कन्द गुप्त)

दान, पश्चात्ताप, संतोष, संयम, दीनता, सत्य और दया ये स्वर्ग के सात द्वार हैं।

स्वर्ग और पृथ्वी हमारे ही अन्दर हैं। हम पृथ्वी से परिचित हैं, पर अपने अन्दर के स्वर्ग से बिल्कुल अपरिचित हैं।

—महात्मा गांधी

यदि स्वर्ग कोई स्थान है तो प्रेम ही वहाँ जाने की राह है।

—टालस्टाय

जहाँ दुःख का लेश भी नहीं है, उस स्वर्ग को दुःखपथ से ही पहुँचने की राह है।

—काउपर

तेरी जन्नत (स्वर्ग) तेरी माँ के पैरों तले है।

—हजरत मोहम्मद

स्वर्ग तो कुछ भी नहीं है, छोड़कर छाया जगत की,
स्वर्ग सपने देखती दुनियां, सदा सोती रही है।

—हरिवंशराय बच्चन (सतरंगिनी)

स्वर्ग न भू से दूर—
शांत मुख नील गगन है,
वायु में नव जीवन है—
शस्य स्मित हरि धरा है,
विश्व आनन्द भरा है !
आत्मवाद की क्रूर शिला से टकरा
हृदय न करो चूर !

—सुमित्रानंदन पंत (वाणी)

यदि यह स्वर्ग कल्पना ही हो,
यदि वह शुद्ध जल्पना ही हो,
तब भी हमें भूमिमाता को अनुपम स्वर्ग बनाना है;
जो देवोपम हैं उसको ही इस धरती पर लाना है।

—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

पान पुराना घी नया अरु कुलवंती नारि।
चौथी पीठ तुरंग की, स्वर्ग निसानी चारि।।

—गंग

इसी जग में हो जाये स्वर्ग, इसी जग में मानव हो देव;
यहीं का वह संगीत अमोल बनेगा चिर सुख की मधुरेख।

—रांगेय राघव (मेधावी)

निगम हैं कहते सुख स्वर्ग है, नरक दुःख यही मत शास्त्र का;
क्रम परन्तु सदा सुख दुख का, न रुकता चलता रहता सखे।

—अनूप शर्मा (सिद्धार्थ)

भगवान् से एकता स्थापित करना ही स्वर्ग है।

—कन्फ्यूशस

स्वाद

स्वाद तो भूख में है, सूखी रोटी भूखे को कितनी स्वादिष्ट लगेगी उतना भर पेट खाये हुए को लड्डू भी नहीं लगेगा।

—महात्मा गांधी

स्वाधीन-स्वाधीनता

हमारा स्वाधीनता लौकिक, और इसलिए मिथ्या है। आपकी स्वाधीनता मानसिक और इसलिए सत्य है। असली स्वाधीनता वही है जो विचार के प्रवाह में बाधक न हो।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

स्वाधीनता सद्गुणों को जगाती है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

जीवन स्वाधीनता का नाम है गुलामी तो मौत है।

—प्रेमचन्द

संसार में स्वाधीनता का चाहे जो भी मूल्य हो, घर में तो पराधीनता ही फूलती फलती है।

—प्रेमचन्द (दो सखियाँ)

लोक निन्दा के भय से अपने प्रेम या अरुचि को छिपाना अपनी आत्मिक स्वाधीनता को खाक में मिलाना है।

—प्रेमचन्द (प्रेमाश्रम)

बंधे बैल और खुले साँड़ में बड़ा अन्तर है। एक रातिब पाकर भी दुर्बल है, दूसरा घास-पात ही खाकर मस्त हो रहा है। स्वाधीनता बड़ी पोषक वस्तु है।

—प्रमचन्द (प्रारब्ध)

स्वाधीन हुए विना स्वाधीन के साथ आदान-प्रदान सम्भव नहीं है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (त्याग का फल)

विश्व धर्म के साथ अपनी इच्छा का मिलान करने पर ही वस्तुतः हम स्वाधीन हो पाते हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (त्याग)

मानव आत्मा की पुकार यह
वह स्वाधीन रहे जग में नित,
पराधीन नर कठपुतले-सा
पर-कर परिचालित जीवनमृत !

—सुमित्रानंदन पंत (लोकायतन)

तब सच्चे स्वाधीन हम, अब हों सब स्वाधीन।
उनका परमात्मा कहाँ, जो आत्मा से हीन।।

—मैथिलीशरण गुप्त

आँधियाँ नहीं जिसमें उमंग भरती हैं,
छातियाँ जहाँ संगीनों से डरती हैं,
शोणित के बदले जहाँ अश्रु बहता है,
वह देश कभी स्वाधीन नहीं रहता है।

—रामधारीसिंह 'दिनकर'

एक ओर स्वाधीनता, सीसु दूसरी ओर।
जो दो में भावै तुम्हें, भरि सो लेहु अँकोर।।

—वियोगी हरि (वीर सतसई)

स्वाधीनता का जन्मसिद्ध अधिकार है केवल मनुष्यत्व को, केवल मनुष्य को नहीं, इस बात को कौन अस्वीकार करेगा।

—शरच्चन्द (अधिकार)

स्वाधीनता हमारी अपनी पूर्णता से, आत्मा के अपने विस्तार से स्वतः ही आ जाती है।

शरच्चन्द्र (शेष प्रश्न)

स्वार्थ

अपने स्वार्थ के लिए शैतान भी धर्मशास्त्र के हवाले दे सकता है।

—शेक्सपियर

जो मानव क्षुद्र कर्मा, स्वार्थ पर है, उसके लिए संसार एक सश्रम कारावास है। वह स्वार्थ के कारागार में अहो रात्रि एक क्षुद्र परिधि के केन्द्र की प्रदक्षिणा के फल को चिरदिन की भाँति अधिकृत करके रख सकेगा, ऐसी साध उसकी नहीं है, उसे यह फल परित्याग करना ही पड़ेगा, केवल श्रम ही उसका सार है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (शक्ति)

सुर नर मुनि सब की यह रीती।
स्वारथ लागि करैं सब प्रीती।।

—तुलसीदास

स्वार्थ में मनुष्य बावला हो जाता है।

—प्रेमचन्द

कौन किसी के साथ निस्वार्थ सलूक करता है। भिक्षा तक तो लोग स्वार्थ ही के लिए देते हैं।

—प्रेमचन्द

स्वार्थ के सभी सगे, बिन स्वारथ कोउ नाहिं।
सेवें पक्षी सरस तरु, निरस भये उड़ जाहिं।।

—तुलसीदास

जेहि ते कछु निज स्वारथ होई।
तेहि पर ममता कर सब कोई।।

—तुलसीदास (मानस-उत्तर०)

अगर मूर्ख, लोभ और मोह के पंजे में फँस जायें तो वे क्षम्य हैं; परंतु विद्या और सभ्यता के उपासकों को स्वार्थान्धता अत्यन्त लज्जाजनक है।

—प्रेमचन्द

व्याघ्र जैसे हिंसक पशु सेवा से वशीभूत हो सकते हैं, पर स्वार्थ को कोई दैविक शक्ति परास्त नहीं कर सकती।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

मनुष्य का हृदय कितना काला, धूर्त, लोभी और स्वार्थान्ध होता है कि अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए किसी की जान, किसी की आबरू की भी परवाह नहीं करता है।

—प्रेमचन्द (प्रेमाश्रम)

जिसे देखिए स्वार्थ में मग्न है। जो जितना ही महान् है, उसका स्वार्थ भी उतना ही महान् है।

—प्रेमचन्द (कर्मभूमि)

स्वार्थ की माया अत्यन्त प्रबल है।

—प्रेमचन्द (अनुभव)

गरज के बावले मनुष्य देखकर भी अनदेखी कर जाते हैं।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

स्वार्थ ही अशुभ संकल्पों को जन्म देता है।

—गुरु गोविन्दसिंह

स्वार्थ के वशीभूत हो जाने पर व्यक्ति करणीय-अकरणीय का भेद भूल जाता है।

—गुरु गोबिंदसिंह

स्वाभिमान

वह नर, नर ही नहीं न जिसमें स्वाभिमान है।
और न अपनेपन का जिसको तनिक ध्यान है।
मृतकपिंड है अथवा यों कहिए कि श्वान है।
अथवा नर होकर भी वह पशु के समान है।

—शिवदास गुप्त (कीचकवध)

पानी वाले प्राण आन पर दे देते हैं;
स्वाभिमान का मान न पर जाने देते हैं।

—राजेन्द्रदेव सेंगर (सारंधा)

कपड़े रोटी के साधन पर, तन मन का क्रय विक्रय होगा,
अपने अधिकारों के हित में पर के अधिकारों को खोना,
इस अमानुषिक स्वार्थ भाव का, गढ़ जब तक तुम ढह न सकोगे,
तब तक यह निश्चय ही मानो, स्वाभिमान से रह न सकोगे।

—अज्ञात

स्वामी

जब स्वामी को सेवक की फिक्र नहीं, तो सेवक को स्वामी की फिक्र क्यों होने लगी ?

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

स्वामित्व के कवच पर धौंस, ताने, धमकी किसी का असर नहीं होता।

—प्रेमचन्द (स्वामिनी)

मालकिन को दुनिया भर की चिन्ताएँ रहती हैं।

—प्रेमचन्द (निर्मला)

मालिक जो कुछ कहे वह ठीक है।

—प्रेमचन्द (गोदान)

स्वामी को कभी-कभी अंधा और कभी बहरा होना चाहिए।

—अज्ञात

सेवा सदन स्वामी आगमनु। मंगल मूल अमंगल दमनू।
तदपि उचित जनु बोलि सप्रीति। पठाइअ काज, नाथ असिनीति॥

—तुलसीदास (रामचरित मानस)

जहाँ कोई मालिक होता है और दूसरा उसका नौकर तो उन दोनों में तुरन्त द्वेष पैदा हो जाता है। मालिक चाहता है कि इससे जितना काम लेते बने, लेना चाहिए। नौकर चाहता है कि मैं कम से कम काम करूँ। उसमें स्नेह या सहानुभूति का नाम तक नहीं होता। दोनों यथार्थ में एक दूसरे के शत्रु होते हैं।

—प्रेमचन्द (पशु से मनुष्य)

स्वामी की आँखें उसके दोनों हाथों की अपेक्षा अधिक काम करती हैं।

—अज्ञात

आलस्य लीन शुचि सज्जनता विहीन,
अन्तर्मलीन पर-पीड़न में प्रवीन।
दे दैव! दंड मन जो कुछ और आवै;
ऐसे प्रभु प्रनर से पर तू बचावै।।

—महावीरप्रसाद द्विवेदी

स्वामी वही है जो उनके बिना भी रह सके, जिसका जीवन संसार की क्षुद्र एवं मूर्खतापूर्ण चीजों पर निर्भर नहीं करता।

—विवेकानंद (उत्तिष्ठत, जाग्रत)

स्वामी-भक्ति

खंध न फैरै घूर वहै, धवला एह धरम्म।
राघव ज्यों रै शखही सींगा तणी सरम्म।

—बाँकीदास (ग्रंथावली)

कहा भयौ जो लखि परत दिन दस कुसुमित नाहिं।
समुझि देखि मन में मधुप ए गुलाब वे आहिं।।

—अज्ञात

स्वास्थ्य

है शरीर का स्वास्थ्य भूमिका जीवन की अविवाद।
होता दृढ़ आरूढ़ उसी पर जीवन का प्रासाद।।

—रामानंद तिवारी (पार्वती)

स्वास्थ्य परिश्रम में है और श्रम के अलावा वहाँ तक पहुँचने का कोई दूसरा राजमार्ग नहीं।

—वेन्डेल फिलप्स

अच्छा स्वास्थ्य एवं अच्छी समझ जीवन के दो सर्वोत्तम वरदान हैं।

—पी० साइरस

हँसना

उससे सावधान रहो जो बालक की हँसी से घृणा करता है।

—लेवेटर

मनुष्य ही सिर्फ एक ऐसा प्राणी है जिसमें हँसने की शक्ति है।

—ग्रेवाइल

जब भी सम्भव हो सदैव हँसो, यह एक सस्ती औषध है। प्रसन्नता ऐसा दर्शनशास्त्र है जो ठीक से समझा नहीं गया। यह मानव जीवन का उज्ज्वल भाग है।

—बायरन

धूप चाहते हो घर में तो हँसो-हँसाओ मग्न रहो,
हरदम ज्ञानी बने रहे यदि तो बदली घिर जायेगी।

—रामधारीसिंह 'दिनकर' (नये सुभाषित)

हँसी

जब मैं स्वयं पर हँसता हूँ तो मेरा बोझ हलका हो जाता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

मनुष्य बराबर वालों की हँसी नहीं सह सकता; क्योंकि उनकी हँसी में ईर्ष्या, व्यंग्य और जलन होती है।

—प्रेमचन्द

हँसी मन की गाँठें बड़ी आसानी से खोल देती है—मेरे मन की ही नहीं, तुम्हारे मन की भी।

—महात्मा गांधी

हँसी प्रकृति की सबसे बड़ी नियामत है।

—डॉ० लक्ष्मणपति वार्ष्णेय

अच्छी हँसी गृह की प्रकाश-किरण है।

—थैकरे

हँसी हमारे जीवन की सफलता की चाबी है।

—अज्ञात

उल्लास और हँसी का नाम ही जवानी है।

—अज्ञात

हँसी छूत की बीमारी है, आपको हँसी आई नहीं कि दूसरे को जबरदस्ती दाँत निकालने पड़ेंगे, भले ही उसकी दाँत निकालने की इच्छा हो या न हो।

—अज्ञात

हमें हँसी तभी आती है जब हम किसी वस्तु और उसके मनोभाव में एकाएक कोई असम्बद्धता या असंगति देख लेते हैं।

—शोपेनहार

मुझे वह हँसी प्रिय है जो होंठों और हृदय को खोल देती है तथा उसी समय आत्मा और दाँतों का दर्शन कराती है।

—विक्टर ह्यूगो

हँसी की सुन्दर पृष्ठभूमि पर यौवन के सुमन खिलते हैं। यौवन को तरोताजा रखने के लिए आप खूब हँसिए।

—जार्ज बर्नार्ड शॉ

हँसी मानव-जाति को दिए गए सर्वोत्तम दिव्य उपहारों में से एक है।

—अज्ञात

यौवन का उन्माद हास्य में है। हँसी ही यौवन का सुन्दर शृंगार है और जो पुरुष यौवन का शृंगार नहीं कर सकता, उसके पास यह कदापि नहीं ठहर सकता।

—केरीबोर

कोई भी मनुष्य जिसने अच्छी तरह दिल खोलकर एक बार हास्य किया है बिल्कुल ऐसा दुराचारी नहीं हो सकता जिसका पुनः सुधार न हो सके।

—कार्लाइल

मुझे विश्वास है कि हरेक बार जब कोई पुरुष मुस्कराता है अथवा उससे अधिक हँसता है तो वह अपने जीवन में वृद्धि करता है।

—स्टर्न

काहू कौ हँसियै नहीं, हँसी कलह को मूल।
हाँसी ही तैं ह्वै गयौ, कुल कौरव निरमूल॥

—वृन्द (सतसई सप्तक)

हँसी बाहिरी चहल-पहल को ही बहुधा दरसाती है।
पर रोने में अन्तरतम तक की हलचल मच जाती है॥
जिससे सोई हुई आत्मा जगती है अकुलाती है।
छूटे हुए किसी साथी को अपने पास बुलाती है॥

—सुभद्राकुमारी चौहान

प्रकृति ने हमारे भीतरी अंगों के व्यायाम के लिए और हमें आनन्द प्रदान करने के लिए हँसी बनाई है।

—स्वेट मार्डन (चीयरफुलनेस)

मनुष्य को अपने समय का कुछ भाग अवश्य ही हँसने में बिताना चाहिए।

—डॉ० जानसन

मानसिक स्वास्थ्य के लिए जी भरकर हँसना अत्यधिक हितकर है।

—स्वेट मार्डन (चीयरफुलनैस)

हँसी में क्या कुछ नहीं छिपा है! यह एक कुंजी है, जिससे हम मनुष्य की पहचान कर सकते हैं।

—स्वेट मार्डन (चीयरफुलनैस)

यदि हास्यप्रियता मुझ में न हो तो मैं मर जाऊँ।

—अब्राहम लिंकन

गुणों के बाद हास्य प्रियता ऐसी वस्तु है, जिसके विना हम जीवित नहीं रह सकते।

—स्ट्रिकलैंड

गम्भीर काम के बाद हास्य-विनोद से जीवन में ताजगी आती है।

—हेलिबर्टन

निर्मल बुद्धि पूर्ण हास्य अथवा ऊट-पटांग हास्य—जिससे मनोविनोद होता है या हँसी ठट्टे की भावना उभरती है, मनुष्य को प्रसन्न-हृदय बनाता है। यह हास्य स्वर्ग से प्राप्त हुआ एक वरदान है।

—स्वेट मार्डन (चीयरफुलनैस)

हठ

मूर्खों के पास युक्तियाँ नहीं होतीं, युक्तियों का उत्तर हठ से देते हैं। युक्ति कायल हो सकती है, नरम हो सकती है, भ्रांत हो सकती है; हठ को कौन कायल करेगा?

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

जिद्द सामने की चोट नहीं सह सकती, उस पर बगली वार करना पड़ता है।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

सिह गमन सुपुरुष वचन, कदलि फलै इक बार।
तिरिया तेल हम्मीर हठ, चढ़ै न दूजी बार।।

—चन्द्रशेखर वाजपेयी (हम्मीर हठ)

हठ तो राव हमीर को, औ रावण को टेक।
सत राजा हरिचंद को, अर्जुन बाण अनेक।।

—जोधराज (हम्मीर हठ)

हर्ष

पूर्ण हर्ष में आनन्द की अपेक्षा गंभीरता अधिक है।

—मानटेन

अधिक हर्ष, मुख्यतः परिस्थिति में एकाएक परिवर्तन होने पर, शांत होता है और जिह्वा की अपेक्षा हृदय में निवास करता है।

—फील्डिंग

चाहत सोई मिलत तब या सम खुशी न और।
मेहागम धुनि गरज सुनि ज्यों चित्त हरषत मोर।।

—ज्ञानसार ग्रन्थावली

हत्या

हत्या के जीभ नहीं होती तो क्या समय पर वह सिर पर चढ़ कर बोलती है।

—शेक्सपियर

एक हत्या से मनुष्य हत्यारा हो जाता है, लाखों की हत्या से वीर; अधिक संख्या पाप को धो देती है।

—पोर्टियस

हया

पर्दा कपड़े का नहीं होता, हया दूसरी चीज है।

—प्रेमचन्द

तुम को बख्शा है खुदा ने जो हया का जेवर।
मोल उसका नहीं कारूँ का खजाना हर्गिज॥

—पं० वृजनारायण चकवस्त

हयादार के लिए आँख का इशारा बहुत है।

— प्रेमचन्द (बहिष्कार)

हलवाहा

हल चलाने वाले अपने शरीर का हवन किया करते हैं। खेत उनकी हवनशाला है। उनके हवन कुंड की ज्वाला कि किरणें चावल के लम्बे और सफेद दानों के रूप में निकलती हैं। गेहूँ के लाल-लाल दानें इस अग्नि की चिनगारियों की डालियाँ-सी हैं।

—पूर्णसिंह

हस्ताक्षर

सब कुछ सूना करके जो चला जाता है, वह भी, अपने इतने चिह्न, इतना इतिहास, समस्त जड़ वस्तुओं पर अपने सजीव हृदय के स्नेह के इतने हस्ताक्षर रख जाता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (मणिहीन)

हाथ

हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ।

—तुलसीदास

पकड़ कर हाथ झकझोरो किसी से जब मिलो 'बेढब'।
नमस्ते बंदगी की जंगली आदत पुरानी हैं।

—बेढब बनारसी (बेढब की बहक)

हार

निर्लज्ज हार कर भी नहीं हारता, मरकर भी नहीं मरता।

—जयशंकर प्रसाद (स्कन्दगुप्त)

जितनी बार हमारा पतन हो उतनी ही बार उठने में गौरव है।

—महात्मा गांधी

जब अपने में ही विश्वास नहीं है और न नेताओं में ही श्रद्धा है, तब हमारी हार अवश्य निश्चित है।

—सरदार वल्लभभाई पटेल

हार क्या है ? शिक्षा के अतिरिक्त कुछ नहीं, एक अच्छी स्थिति के लिए केवल पहला कदम है।

—वेन्डेल फिलिप

जो महान् उद्देश्य के लिए मरते हैं उनकी कभी हार नहीं होती।

—बायरन

हास्य

हमारे हास्य में हमारी विजय-भावना निहित रहती है···जब-जब हमारी श्रेष्ठता स्थापित होती है, तब-तब हमें हँसी आती है।

—ले हन्ट

हास्य संसार का सबसे बहुमूल्य उपहार है।

—अज्ञात

आकस्मिक नवीनता हास्य का प्राण है।

—टामस हाब्स

हास्य की परिभाषा असम्भव है। कुरूपता, अशुद्धता, भ्रष्टता तथा दोषपूर्ण व्यवहार द्वारा ही हास्य प्रकट होता है।

—टामस विल्सन

आप अपने सारे दुःखों, सारे कटु अनुभवों, सारी उलझनों को हास्य के अथाह सागर में डुबो कर जी का भार हल्का कर सकते हैं।

—अज्ञात

तन और मन के पोषण के लिए हास्य एक बेहतरीन टॉनिक है।

—अज्ञात

हास्य वह मिसरी है, जो उपदेश की कड़वी कुनैन को भी इतना मीठा बना देती है कि छोटे-छोटे बच्चों से लेकर बड़े-बड़े बुड्ढे तक उसे बड़ी रुचि से चाट जाते हैं।

—अज्ञात

हास्य पाचन-शक्ति ठीक करने की हमारी अच्छी दवा है। हास्य रूपी परमौषधि के सेवन से हाज्मा जरूर ठीक हो जाता है।

—अज्ञात

हित

परहित सरिस धर्म नहिं भाई।

—तुलसीदास

हित अनहित पशु पक्षिहुँ जाना।

—तुलसीदास

कीरति भनिति भूति भल सोई। सुरसरि सम सब कर हित होई॥

—तुलसीदास

जैसे बीज अपना अस्तित्व मिटाकर (पृथ्वी नें मिलकर) वृक्ष बनकर एक का अनेक हो जाता है उसी प्रकार से वह प्राणी सब प्राणियों के हित में (सर्वभूत हिते रतः) अपने को मिटा देता है वह अनन्त शक्तिमान् हो जाता है।

—स्वामी भजनानन्द

हिंसा

हे विधाता ! अपनी इस सृष्टि में,
की नहीं तुमने कभी शक्ति की अवमानना ।
सौंप दी उदार भी, हिंसा भी,
प्रनलों के हाथ, आश्चर्य महिमा से ।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

जहाँ सिर्फ कायरता और हिंसा के बीच किसी एक के चुनाव की बात हो, वहाँ मैं हिंसा के पक्ष मे राय दूँगा ।

—महात्मा गांधी

जो फूट डालती है, भेद बढ़ाती है, वही हिंसा है ।

—विनोबा भावे

जो मनुष्य हिंसा नहीं करता और माँस खाने से परहेज करता है, सारा संसार उसका सम्मान करता है।

—संत तिरुवल्लुवर

यह सर्वथा असत्य है कि हिंसा शान्त हो सकती है ।

—जैनेन्द्र

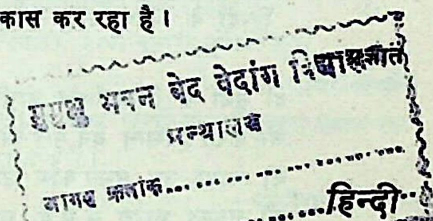
जिस भाँति भौंरा फूलों की रक्षा करता हुआ मधु को ग्रहण करता है उसी प्रकार मनुष्य को हिंसा न करते हुए अर्थों को ग्रहण करना चाहिए ।

-विदुर

व्यक्तिगत हिंसा में वासना की तीव्रता होती है। स्टेट की हिंसा में वैसी तीव्रता नहीं होती। फिर स्टेट की हिंसा खुली हुई है। उसके साथ छिपाव का वातावरण कम होता है, फिर जहाँ स्टेट शब्द है उसके साथ कम-बहुत हिंसा गर्भित है ही। कहा जा सकता है कि वह बहुत नैमित्तिक है, संकल्पी उतनी नहीं।

—जैनेन्द्र

हिंसा पशुता की प्रवृत्ति है मानवता की नहीं और मनुष्य पशुता को छोड़कर मानवता का पूर्ण विकास कर रहा है।



जिस हिन्दू को है नहीं, हिन्दी का अनुराग।
निश्चय उसके जान को, फूट गए हैं भाग॥
जिसको प्यारी है नहीं, निज भाषा निज देश।
वह सूकर सा डोलता, धरे मनुज का भेष॥

—जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी

बानी हिन्दी, भाषन की महारानी।
चन्द सूर तुलसी से या में, कवी भये लासानी॥
दीन मलीन कहत जोया कों, हैं सो अति अज्ञानी।
या सम काव्य छंद नहीं देख्यौ, है दुनिया भर छानी॥
का गिनती उर्दू बंगला की, भरे अंगरेजिहु पानी।
आजहुँ याकों सब जग बोलत, गोरे तुरुक जपानी॥
है भारत की भाषा निहचय, हिन्दी हिन्दुस्थानी।
जगन्नाथ हिन्दी भाषा को, है सेवक अभिमानी॥

—जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी

चहहु जु साँचो निज कल्यान। तो सब जिलि भारत संतान।।
जपो निरन्तर एक जबान। हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान।।
जबहिं सुधरि हैं जन्म निदान। तबहिं भलो करि है भगवान।।
जब रहि है निसदिन यह ध्यान। हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान।।

—प्रतापनारायण मिश्र

इंग्लिश का ग्रंथ समूह बहुत भारी है।
संस्कृत भी सब के लिए सौख्यकारी है।।
इन दोनों में से अर्थ रत्न ले लीजै।
हिन्दी के अर्पण उन्हें प्रेमयुक्त कीजै।।

—महावीरप्रसाद द्विवेदी

दो सूबों के भिन्न-भिन्न बोली वाले जन।
जब करते हैं खिन्न बने मुख पर अवलोकन।।
जो भाषा उस समय काम उनके है आती।
जो समस्त भारत भू में है, समझी जाती।।
उस अति सरला उपयोगिनी हिन्दी भाषा के लिए।
हम में कितने हैं जिन्होंने तन मन धन अर्पण किए।।

—अयोध्यासिंह उपाध्याय (पद्य प्रसून)

अंग्रेजी जरमन फ्रेंच ग्रीक लैटिन ज्यों,
रसियन जापानी चीनी प्राकृत प्रमानी हो।
तमिल तैलंगी तूलू द्राविड़ी मराठी ब्राह्मी,
उड़िया बंगाली पाली गुजराती छानी हो।
जितनी अनार्य आर्य भाषा जग जाहिर हैं,
फारसी ऐराबी तुर्की सब मम आनी हो।
जनम वृथा है तो भी मेरे जान मानव को,
हिन्द में जनम पा के हिन्दी जो न जानी हो।।

—गिरिधर शर्मा

हिन्दी के द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

—महर्षि दयानन्द

शुद्ध-शुद्ध बोलै भेदन को खोलै,
भले ब्रह्म सो मिलावै अंत मुक्ति देन हारी है।
जानै न असत्य नेक सत्य ही लखावै सदा,
आरज के धर्म की करत रखवारी है।
प्रेम परिवार सों बढ़ावै शिव सम्पतिजू
सब ही सो मोदभरी बोले बैन प्यारी है।
भारत निवासी बंधुताहि क्यों बिसारी हाय,
ऐसी गुनवारी भाषा नागरी हमारी है॥

—शिव सम्पत्ति

भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच हिन्दी-प्रचार के द्वारा एकता स्थापित करने वाले सच्चे भारत-बन्धु हैं।

—योगीराज अरविन्द

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।

—महात्मा गांधी

देश के सबसे बडे भूभाग में बोली जाने वाली हिन्दी राष्ट्र भाषा-पद की अधिकारिणी है। —सुभाषचन्द्र बोस

मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ, परन्तु मेरे देश में हिन्दी की इज्जत न हो, वह मैं नहीं सह सकता।

—विनोबा भावे

राष्ट्रभाषा के प्रचार को मैं राष्ट्रीयता का अंग मानता हूँ।

—राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद

हिन्दी स्वयं अपनी ताकत से बढ़ेगी।

—पं० जवाहरलाल नेहरू

हिन्दी का प्रचार राष्ट्रीयता का प्रचार है। —राजर्षि टंडन

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।

—महात्मा गांधी

हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।

—सुमित्रानंदन पंत

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न उर की शूल।।

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना नहीं है, वह तो है ही।

—कन्हैयालाल मा० मुन्शी

हिन्दी सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में महानतम स्थान रखती है।

—डॉ० अमरनाथ झा

हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है।

—मैथिलीशरण गुप्त

मेरा आग्रहपूर्वक कथन है कि अपनी सारी मानसिक शक्ति हिन्दी भाषा के अध्ययन में लगावें। हम यही समझें कि हमारे प्रथम धर्मों में से एक धर्म यह भी है।

—विनोबा भावे

हिन्दी की एक निश्चित धारा है, निश्चित संस्कार है।

—जैनेन्द्र

हिन्दुत्व

सब कुछ गया, जाय, एक, रक्खो हिंदूपन की टेक।
ऐसा है वह कौन विवेक, करता हो जो हमको एक?
और बढ़ा सकता हो मान? केवल हिन्दू हिन्दुस्तान।

—मैथिलीशरण गुप्त (हिन्दू)
सू० को १२।६

हिन्दू

हिन्दू फिर भी सुनो सचेत,
हरे तुम्हीं से हैं सब खेत।
ये हैं सदा तुम्हारे अंग,
होते गये सदा जो भंग।।
अपनाओ फिर इन्हें सहर्ष,
पाओ एक संग उत्कर्ष।
किन्तु जिलाता है निज श्वास,
रक्खो निज बल निज विश्वास।।
तको पराया मुँह मत और,
बनो स्वावलम्वी सब ठौर।।
करे न यदि कोई निज कर्म,
तो क्या हम भी तजें स्वधर्म ?
भारतीय संस्कृति का भार,
एक तुम्हीं पर बारम्बार।।

—मैथिलीशरण गुप्त (हिन्दू)

हिन्दू, हाय! तुम्हें धिक्कार।
क्यों न हँसे तुम पर संसार?
विधर्मियों का जादू जाल,
जिन पर चले मरें वे लाल।

—मैथिलीशरण गुप्त (हिन्दू)

जो हिन्दू अपने धर्म के भाव को समझता है, वह सभी धर्मों का सम्मान करता है।

—डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

अतिथि, ब्राह्मण और गौ यही तो हिन्दू के आराध्य हैं।

—मदनमोहन मालवीय

सारे ही संसार ने हिन्दुओं का अन्न खाया है। वे भ्रष्ट नहीं हुए, वे हिन्दू नहीं बन जाते। इसलिए ओ हिन्दुओ! आगे उसी न्याय से अपना अन्न बचाओ। अब अपने पराक्रम से जीत कर संसार का अन्न भी खाओ और हिन्दू भी बने रहो। तभी संसार में जी सकोगे।

—विनायक दामोदर सावरकर

'हिन्दू' शब्द कोई साम्प्रादायिक शब्द नहीं है, बल्कि वह जातीयता का बोधक है।

—दादाभाई नौरोजी

हिन्दुत्व विचार और महत्वाकांक्षा का एक सजीव और स्वयं जीवन की गतियों के साथ गति करता हुआ उत्तराधिकारी है; एक ऐसा उत्तराधिकार, जिसमें भारत की प्रत्येक जाति ने अपना सुस्पष्ट और विशिष्ट योग दिया है।

—डॉ० राधाकृष्णन्

हिन्दू तो एक वे आफ लाइफ है। यह हमारे जीवन का एक अंग है, हमारे धर्म का अंग नहीं है। हम सनातन धर्मी हो सकते हैं, हम वैष्णव हो सकते हैं, शैव हो सकते हैं, शाक्त हो सकते हैं बौद्ध हो सकते हैं, जैनी हो सकते हैं, लेकिन सबका मिश्रण, सबका समुच्चय, सबका समन्वय जो है वह हमारा एक जातीयता के रूप में होता है। तो धर्म हमारा अलग हो सकता है, लेकिन हिन्दू का अर्थ है हिन्दुस्तान में रहने वाले जितने लोग हैं, हिन्दू शब्द उन सबका वाचक है।

—डॉ० राधाकृष्णन्

'हिन्दू' सम्प्रदाय का प्रतीक नहीं परन्तु उदार व्यापक शब्द के अन्तर्गत भारत की समस्त संस्कृति, सभ्यता मानव विकास, इतिहास एवं भारतीय विचारों के साथ साथ विविध भारतीय पंथों और मत मतान्तरों का समविश हो जाता है। हिन्दू शब्द महासागर तुल्य है जिसमें समस्त नदियाँ बिभिन्न नामों के साथ जल लाती हैं, उसमें मिलकरएकाकारहो जाती है।

—विवेकानन्द

सच्चा हिन्दू दुनिया भरके संकट सह लेगा, पर अपने धर्म से कदापि विचलित न होगा।

—गुरु गोबिन्दसिंह

हिन्दू शब्द कोई साम्प्रदायिक शब्द नहीं है।

—सर फजल भाई करीम भाई

पाश्चात्य जन हिन्दुओं को कल्पनाशील मानते हैं क्योंकि वह मस्तिष्क से परे की बातों को सोचता तथा करता है और भारतीय मत के अनुसार वे बालक हैं जो अपनी नासमझी के कारण नित्य आत्मा को त्याग अनित्य भोगों की ओर प्रवृत्त हैं।

—विवेकानंद

जो वर्णों और आश्रमों की व्यवस्था में निष्ठा रखने वाला, गौ सेवक, श्रुतियों को माता की भाँति पूज्य मानने वाला तथा सब धर्मों का आदर करने वाला है; देव मूर्ति की जो आज्ञा नहीं करता, पूर्वजन्म को मानता और उससे मुक्त होने की चेष्टा करता है, तथा जो सदा सब जीवों के अनुकूल बर्ताव को अपनाता है, वही 'हिन्दू' माना गया है। हिंसा से उसका चित्त दुःखी होता है; इसलिए उसे हिन्दू कहा गया है।

—विनोबा भावे

हिन्दू अनुकूल आचरण करने वाले तथा सबके प्रति दयालु होते हैं। उनका संसार में किसी से वैर नहीं है।

—अबुलफजल

विश्व के राष्ट्रों में भारतवर्ष के प्रति लोगों का प्रेम और आदर उसकी बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक सम्पत्ति के कारण है।

—प्रो० लूई रिनाड (पेरिस विश्व वि०)

वे सभी हिन्दू, जिनके दिल में श्रद्धा और धर्म का अनुराग होता है, भारत के हर प्रांत से सूर्य ग्रहण के अवसर पर त्रिवेणी की पावनधारा में अपने पापों का विसर्जन करने के लिए जाते हैं।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

हिन्दू लोग धार्मिक, प्रसन्न, न्यायप्रिय, सत्य भक्त, कृतज्ञ और प्रभु भक्ति से युक्त होते हैं।

—सैमुएल जानसन

हिन्दू चिकित्सक शल्य-क्रिया (शस्त्र-चिकित्सा) में सिद्धहस्त थे। उन्हींसे यूनानियों ने भी वैदक का ज्ञान प्राप्त किया।

—डॉ० हण्टर

शल्य-चिकित्सा (शस्त्र-चिकित्सा) में हिन्दुओं ने जो उन्नति की थी, वह उतनी ही आश्चर्यजनक थी जितनी रसायनशास्त्र में की हुई उन्नति।

—एलफिंस्टन्न

बीजगणित और रेखागणित का आविष्कार और ज्योतिष के साथ उनका प्रथम प्रयोग हिन्दुओं के ही द्वारा हुआ था।

—मॉनियर विलियम्स

बुद्धि और विचारशीलता में हिन्दू सभी देशों से ऊँचे हैं। गणित तथा अन्य फलित ज्योतिष में उनका ज्ञान किसी भी अन्य जाति से अधिक यथार्थ है। चिकित्सा-विषयक उनकी सम्मति प्रकट कोटि की होती है।

—याकूबी

यदि हम पक्षपात रहित होकर भलीभाँति परीक्ष करें, तो हमको स्वीकार करना होगा कि सारे संसार में साहित्य, धर्म और सभ्यता का प्रसार हिन्दुओं ने किया है।

—श्री डी० ओ० ब्राउन

हिमालय का 'हि' और सिन्धु (समुद्र) का इन्धु लेकर 'हिन्दू' शब्द बना है। उसी का अपभ्रंश हिन्दू शब्द है। हिमालय से समुद्र तक के स्थान का नाम हिन्दुस्तान और उस में बसने वाली जाति का नाम हिन्दू है।

—जयपाल गोबिन का

हिन्दू अपने श्रेयस् की उपलब्धि जीवन के किसी भी आश्रम में कर सकता है।

—स्वामी विवेकानंद

हिन्दुओं में जो लोग यह कह कर शिकायत करते हैं कि देश-विदेश में उनका मस्तक हम लोग जितना नीचा कर रहे हैं, उतना ईसाई-पादरी भी नहीं कर सकते हैं ठीक ही कहते हैं।···वास्तव में विदेशी विधर्मियों के हाथ में हम जैसे विभीषण और कोई नहीं दिखाई देते।

—शरच्चन्द्र (ग्रहदाह)

जिस (भारतीय) सभ्यता को अपनें उच्चवर्ग के लोगों के अत्यन्त विशाल वैभव-विलास पर गर्व था, उसमें ताले-चाभी को लोग जानते ही नहीं थे। क्या कहीं पर हिन्दुओं की ईमानदारी के एक जरा से अंश के बराबर भी ईमानदारी की कल्पना की जा सकती है।

—मेगस्थनीज

हिन्दुओं के चरित्र की निष्कपटता तथा ईमानदारी उनकी मुख्य पहचान है। वे कभी अनीति युक्त वचन नहीं बोलते।

—श्री किडिल

हिन्दू अनुकूल आचरण करने वाले तथा सबके प्रति दयालु होते हैं। उनका संसार में किसी से भी वैर नहीं है।

—अबुल फजल

हिन्दू धर्म

हिन्दू धर्म की व्यूह रचना चक्रव्यूह की रचना से बिल्कुल विपरीत है। चक्रव्यूह में तो प्रवेश करने के लिए हज़ारों मार्ग थे; किन्तु यहाँ बाहर निकलने के हज़ारों मार्ग हैं; किन्तु प्रवेश का मार्ग बिल्कुल बन्द है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (गोरा)

हिन्दू धर्म माता के समान सभी मतों को अपनी गोद में शरण देने का प्रयास करता है। यह मानव को मानव स्वीकार करता है। ज्ञान की किसी एक मूर्ति विशेषको ही नहीं मानता। वह ज्ञान के अनेकों प्रकार के विश्वासों का प्रतिदान करता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (गोरा)

हिन्दू धर्म संन्यास की श्रेष्ठता स्वीकार करते हुए भी, दैनिक कर्त्तव्यों के प्रति सच्चे बने रहने का धर्म है।

—स्वामी विवेकानंद

मैंने यूरोप और एशिया के सभी धर्मों का अध्ययन किया है, परन्तु मुझे उन सबमें हिन्द-धर्म ही सर्वश्रेष्ठ दिखाई देता है।···मेरा विश्वास है कि इसके सामने एक दिन समस्त जगत् को सिर झुकाना पड़ेगा।

—रोम्यां रोलां

जो कोई भी अपने परिवार वालों का पालन-पोषण करता है। उनके साथ सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिए साधन जुटाता है वह सचमुच आदर्श हिन्दू धर्म को मानने वाला और सच्चा मानव है।

— डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

मानव हृदय का अमर स्वप्न, जीवके आत्मज्ञान के लिए तीव्र उत्कण्ठा ही हिन्दू धर्म का आधार है।

—डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

हिन्दू धर्म का विश्वास था कि जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश के सामने अंधकार विलीन हो जाता है उसी प्रकार सत्य के सम्पर्क में आकर असत्य स्वयं ही नष्ट हो जायेगा।

—डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

हिन्दू धर्म इस बात पर जोर देता है कि मनुष्य अपौरुषयता की उपलब्धि करे। इसका अर्थ है कि वस्तु जगत् के परे भी कुछ है, जिस तक पहुँचने का प्रयास मनुष्य बराबर किया करता है।

—डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

हिन्दू धर्म का परवर्ती इतिहास इसी औपनिषदिक सुदृढ़ आधार या निर्मित एक भव्य भवन का इतिहास है ।

—डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

हिन्दू धर्म एक प्राणी है, परिणाम नहीं, एक परम्परा है, अटल दिव्य प्रकाशन नहीं ।

—डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

हिन्दू धर्म में से महात्मा बुद्ध ने बौद्धधर्म का प्रतिपादन किया । इसी बौद्धधर्म की नकल करके ईसामसीह ने ईसाई मत का प्रतिपादन किया । उसी की धार का पानी चढ़ाकर इस्लामी मत अस्तित्व में आया । उस मुहमदी धर्म के प्रवाह को सन्त नानक ने पुनः आर्यधर्म से लाकर जोड़ दिया । हे अखिल विश्व के मानवो ! यदि तुम धर्मच्युत नहीं हो गए हो, और यह धर्म यदि तुम्हारा प्राण है, तो अपने प्राण-प्रदाता इस आर्य-भू का अभिनन्दन करो ।

—विनायक दामोदर सावरकर

हिन्दू धर्म ने यह मानने की मूर्खता की कि सत्य धीरे-धीरे प्रकट होकर रहेगा ।

—डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

हिन्दू धर्म हमारे सम्मुख नियमों और विनियमों का एक कार्यक्रम प्रस्तुत करता है और यह अनुमति देता है कि उनमें निरन्तर परिवर्तन किया जा सकता है ।

—डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

हिन्दू धर्म की नींव किसी व्यक्ति विशेष, देवदूत या सन्त के विचारों पर ही नहीं है; किन्तु ऐसे सत्य सिद्धान्तों पर है जो तर्क पर टिक सकें, अनुभवगम्य हों, किसी भी देश व काल में मनुष्यमात्र के लिए हितकर मार्ग दिखाते हों ।

—ईश्वरप्रसाद वर्मा

मानव धर्म ही हिन्दू धर्म की परिसीमा और पूर्णता मानी गई है।

—विनायक दामोदर सावरकर

हिन्दू-मुसलमान

हिन्दू कहै सो हम बड़े, मुसलमान कहै हम्म।
एक मुंग दो फाड़ हैं, कुण जादा कुण कम्म।
कुण जादा कुण कम्म, कबी करना नहिं कजिया।
एक भगत हो राम, दूजो रेमान से रजिया।
कहे दीन दरवेश, दोय सरिता मिल सिन्धू।
सब दा साहब एक, एक मुसलमान हिन्दू।

—दीन दरवेश

दोनों भाई हाथ-पग, दोनों भाई कान।
दोनों भाई नैन हैं, हिन्दू मुसलमान।

—दादू

हिन्दू में क्या और है, मुसलमान में और।
साहिब सब का एक है, व्याप रहा सर्व ठौर।।

—रसनिधि (सतसई सप्तक)

वही महादेव यही मुहम्मद, ब्रह्मा आदम कहिए।
कोई हिन्दू कोई तुरुक कहावै, एक जमीं पर रहिए।।

—कबीर (ग्रन्थावली)

घर की घृणा और यह पेट, उभय और है चोर-लपेट।
इसीलिए हिन्दू संतान, आज अधिकतर है क्रिस्तान।
इसीलिए निज धर्म विहाय, हिन्दू मुसलमान हैं हाय।

—मैथिलीशरण गुप्त (हिन्दू)

हिसाब

क्षुद्र लोगों के हिसाब की वही में शिथिलता रहती है, किन्तु जो जाति के साधु हैं, जो महाजन हैं, लाखों के कारबार में, एक पैसे का हिसाब न मिलने पर रात-भर नहीं सो सकते, जो लाखों के लाभ के आकांक्षी हैं, वे छोटी-सी भूल से भी डरते हैं, वे हिसाब को एकदम धवल सत्य किए बिना नहीं रह सकते।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (हिसाब)

हिंसा

जिय हिंसा जग में बुरी, हिंसा फल दुःख देत।
मकरी मांखी भक्ष्यती, ताहि चिरी भख लेत।।

—भैया भगवतीदास (ब्रह्मविलास)

हिंसा का आघात तपस्या ने कब कहाँ सहा है ?
देवों का दल सदा दानवों से हारता रहा है।

—रामधारीसिंह 'दिनकर'

घोरि हरत दुर्जन जबहिं, सुजनन कर धन प्राण।
रहित अहिंसा मौन जो, हिंसा सोइ महान।।

—द्वारकाप्रसाद मिश्र (कृष्णायन)

तलवारें यदि तुम बोओगे, तो तलवारें ही उपजेंगी;
सर्वनाश कर देंगी जग का, अयुत युगों तक वे दुःख देंगी;
है लोकोक्ति पुरानी यद्यपि, फिर भी है सत्यता विमंडित;
जो तलवार चलायेंगे वो तलवारों से होंगे खंडित !

—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (हम विषपायी जनम के)

हिंसा और अहिंसा दोनों प्रकृति सिद्ध गुण हैं मानव के,
विष मधु दोनों ही निकले हैं, मंथन सार हृदय अर्णव के;
एक राक्षसी क्रीड़ा है तो, दूजा है देवत्व दिवाकर,
एक निम्न गति प्रेरक है तो; बना अन्य सोपन ऊर्ध्वंचर,
हमें खींचना है मानव को, जोर लगा नीचे से ऊपर,
क्योंकि उच्चवर्ग गति में ही पाता, यह नर निज स्वरूप चिर सुन्दर ।।

—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (हम विषपायी जनम के)

हृदय

अनुतप्त हृदय वह तिरस्कार चाहता है जिसमें सहानुभूति और सहृदयता हो, वह नहीं जो अपमान सूचक और क्रूरता पूर्ण हो। पका हुआ फोड़ नश्तर का घाव चाहता है, पत्थर का आघात नहीं।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

रोटी के साथ लोगों के हृदय अलग हो जाते हैं। वे हमेशा के लिए गैर हो जाते हैं। फिर उनमें वही नाता रह जाता है, जो गाँव के और आदमियों में होता है।

—प्रेमचन्द अलग्योझा)

नारी हृदय धरती के समान है, जिससे मिठास भी मिल सकती है, कड़ुवापन भी। उसके अन्दर पड़ने वाले वीज में जैसी शक्ति हो।

—प्रेमचन्द (गोदान)

जब हृदय जलता है, तो वाणी भी अग्निमय हो जाती है।

—प्रेमचन्द (निर्मला)

हाथ हाथ का अनुसरण करते हैं, नेत्र नेत्र पर ठहरते हैं औरकु इस प्रकार हमारे हृदय का कार्य प्रारम्भ होता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

आकुल हृदय को जलतरंगों से प्रेम होता है।

—प्रेमचन्द (बैंक का दिवाला)

स्त्रियों का हृदय अधिकार प्रिय होता है।

—प्रेमचन्द (शांति)

हृदय की चोट भाव-कौशल से नहीं छिपाई जा सकती है।

—प्रेमचन्द (निर्मला)

मानव हृदय एक रहस्यमय वस्तु है। कभी तो वह लाखों की ओर आँख उठाकर नहीं देखता और कभी कौड़ियों पर फिसल पड़ता है। कभी सैंकड़ों निर्दोषों की हत्या पर आह नहीं करता और कभी एक बच्चे को देखकर रो पड़ता है।

—प्रेमचन्द (वरदान)

हृदय के भीतर परिपूर्ण आनन्द का विकास तथा शांति ही सबसे अधिक दुर्लभ है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (गोरा)

हृदय के साथ हृदय का साक्षात् सहज नहीं, मानव के साथ मानव का सम्बन्ध नहीं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (नौका डूबी)

जिनका हृदय एकमात्र बर्फ का टुकड़ा है और जिनके हृदय में प्रेम की जलन-तड़पन के लिए बिल्कुल स्थान ही नहीं, वे कदाचित् बहुत दिनों तक ताजे बने रहते हैं; क्योंकि कदाचित् वे कंजूस की भांति भीतर और बाहर से अपने को सहेज-सहेज कर रख सकते हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (मणिहीन)

कोमल हृदय आपत्तियों से स्थिर नहीं रह सकता है।

—प्रेमचन्द (सज्जनता का दंड)

हृदय में आज जिससे तृप्ति, कल उसीसे वितृष्णा है। उसमें ज्वार-भाटा चलता है, कभी उसमें उल्लास तो कभी अपवाद।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

किसी जड़ पदार्थ के टूट जाने पर, उनके जोड़ों को मिलाकर किसी प्रकार उसे जोड़ा जा सकता है; किन्तु दो मानवी हृदयों को जहाँ से फट जाते हैं, विरह की लम्बी अवधि बीत जाने पर फिर वहाँ ठीक पहले जैसा जोड़ नहीं मिलता ? कारण, हृदय सजीव पदार्थ है, पल में उसकी परिणति होती है और पल मेंही परिवर्तन।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (अनाथ)

जिस तरह पत्थर और पानी में भी आग छिपी रहती है, उसी तरह मनुष्य के हृदय में भी—चाहे वह कैसा ही क्रूर और कठोर क्यों न हो, उत्कृष्ट और कोमल भाव छिपे रहते हैं।

—प्रेमचन्द (शंखनाद)

मानव हृदय के रहस्य कभी समझ में नहीं आते।

—प्रेमचन्द (शंखनाद)

हृदय की बर्बरता के साथ सिर्फ अश्रद्धा और उपहास करने से ही विश्व में सब प्रश्नों का उत्तर नहीं हो जाता।

—शरच्चन्द्र (श्रीकान्त पर्व ३)

जिसके हृदय की पुस्तक खुल चुकी है, उसे किसी अन्य पुस्तक की आवश्यकता नहीं रह जाती। उनका महत्व केवल इतना भर है कि वे हम में लालसा जगाती हैं। वे प्रायः अन्य व्यक्तियों के अनुभव होती हैं।

—स्वामी विवेकानंद

मनुष्य का हृदय अभिलाषाओं का क्रीड़ा स्थल और कामनाओं का आवास है।

—प्रेमचन्द (वरदान)

कठोर से कठोर हृदय में भी मातृ-स्नेह की स्मृतियाँ संचित होती हैं।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

सरल हृदय मनुष्य मोम की भाँति जितनी जल्दी कठोर हो जाता है, उतनी ही जल्दी पसीज भी जाता है।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

जिसे ईश्वर ने दिया हो उसे आनन्दोत्सव में दिल खोलकर व्यय करना चाहिए। हाँ, ऋण लेकर नहीं, घर से बचकर नहीं, अपनी हैसियत देखकर, हृदय की उमंग ऐसे ही अवसर पर निकलती है।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

मुखमण्डल हृदय का दर्पण है।

—प्रेमचन्द (ममता)

सभ्यता, स्वेच्छाचारिता का भूत स्त्रियों के कोमल हृदय पर बड़ी सुगमता से कब्जा कर सकता है।

—प्रेमचन्द (शान्ति)

औरत का हृदय बड़ा दुर्बल है, मोह उसका प्राण है। जीवन रहते मोह तोड़ना उसके लिए असम्भव है।

—प्रेमचन्द (गोदान)

योग साधकर भी मनुष्य का हृदय निर्जीव नहीं होता

—प्रेमचन्द (हारजीत)

अपनी या अपनों की बुराइयों पर शर्मिन्दा होना सच्चे हृदयों ही का काम है।

—प्रेमचन्द (गबन)

तुच्छ हृदय का आदमी तो वास्तव में पशु है।

—प्रेमचन्द (विषम समस्या)

यह भी कोई हृदय है कि घर में चाहे आग लग जाए, दुनिया में चाहे कितना ही उपहास हो रहा हो, लेकिन आदमी अपने राग-रंग में मस्त रहे। वह हृदय है कि पत्थर।

—प्रेमचन्द (नैराश्य लीला)

यदि सुन्दर मुख सिफारिश पत्र है तो सुन्दर हृदय विश्वास-पत्र।

—बुलवर

सुन्दर हृदय का मूल्य स्वर्ण के सदृश है।

—शेक्सपियर

नारी हृदय कोमल है, लेकिन केवल अनुकूल दशा में, जिस दशा में पुरुष दूसरों को दबाता है, स्त्री शील और विनय की देवी हो जाती है। लेकिन जिसमें अपना सर्वनाश हो गया हो उसके प्रति स्त्री को पुरुष से कम घृणा और क्रोध नहीं होता। अन्तर इतना ही है कि पुरुष शस्त्रों से काम लेता है और स्त्री कौशल से।

—प्रेमचन्द (माता का हृदय)

मनुष्य का हृदय एक अथाह सागर है, जहाँ कमल के फूलों के साथ रक्त की प्यासी जोंके भी उत्पन्न होती रहती हैं।

—अज्ञात

हाथ-हाथ का अनुसरण करते हैं, नेत्र-नेत्र पर ठहरते हैं और इस प्रकार हमारे हृदय का कार्य प्रारम्भ होता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

हृदय की आँख हमारे चर्मचक्षु से भी अधिक प्रबल है।

—अज्ञात

हृदय कृपाण से अधिक शक्तिशाली होता है।

—वेन्डेल फिलिप

ज्ञानी पुरुष का हृदय दर्पण के सदृश्य होना चाहिए जो किसी वस्तु को बिना दूषित किए हुएँ परीवर्तित कर देता है।

—कन्फ्यूशस

रूखा शीशा जो टूटे तो सब कोई सुन पाता है।
कुचला जाना हृदय कुसुम का किसे सुनाई पड़ता है।

—जयशंकर प्रसाद (प्रेमपथिक)

है यदि तेरा हृदय विशाल, विराट् प्रणय का इच्छुक क्यों ?
है यदि प्रणय अतल, वो अपनी अतल पूर्ति का भिक्षुक क्यों ?
दावानल की काल ज्वाल जलती बुझती एकाकी है।
जीवन ही यदि ऊँचा तो ऊँची समाधि हो रक्षक क्यों ?

—अज्ञेय (ईत्यलम्)

एक सच्चा हृदय सारे संसार की विलक्षण शक्तियों से अधिक मूल्यवान है।

—श्री अरविन्द

पहाड़ों में भी हरियाली होती है, पाषाण हृदयों में भी रस रहता है।

—प्रेमचन्द

भग्न हृदयों के लिए संसार सूना है।

—प्रेमचन्द

मानव-हृदय एक रहस्यमय वस्तु है।

—प्रेमचन्द (वरदान)

हृदय की कोई भाषा नहीं होती है, हृदय हृदय से बातचीत करता है।

—महात्मा गांधी

मनुष्य का हृदय अभिलाषाओं का क्रीड़ा-स्थल और कामनाओं का आवास है।

—प्रेमचन्द

हृदयहीन

मनुष्य कितना ही हृदयहीन हो, उसके हृदय के किसी न किसी कोने में पराग की भाँति रस छिपा रहता है।···जिस तरह पानी और पत्थर में आग छिपी रहती है उसी तरह मनुष्य के हृदय में भी···चाहे वह कैसा ही क्रूर और कठोर क्यों न हो, उत्कृष्ट और कोमल भाव छिपे रहते हैं।

— प्रेमचन्द

केवल बुद्धि की वृद्धि होने से मनुष्य बहुधा हृदय शून्य हो जाता है। दया, प्रेम, शान्ति आदि हृदय के सात्विक गुण हैं। वे बुद्धि के प्रखर तेज से झुलस सकते हैं।

—स्वामी विवेकानंद

हिन्दू समाज

हिन्दू समाज तो सदैव से नये-नये सम्प्रदायों को आश्रय देता आया है। अतः वह सभी सम्प्रदायों का एक मिला-जुला समाज है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (गोरा)

होनहार

जो पूरा इतिहास जानते हैं, वे होनहार होते हैं, उन्हें समझने के लिए अधिक दिमाग की आवश्यकता नहीं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (दो बहनें)

जैसी हो भवितव्यता, तैसी मिलै सहाय ।
आपु न आवै ताहि पै, ताहि तहाँ लै जाय ।।

—तुलसीदास

विधि का लेखा को मेटन हारा।

—तुलसीदास

होनहार कितना प्रबल, कितना निष्ठुर और कितना निर्मम है।

—प्रेमचन्द

तब हुआ फल के विषय में इस प्रकार विचार।
मुक्त है सर्वत्र ही भवितव्यता का द्वार।।

—मैथिलीशरण गुप्त (शकुन्तला)

जग में जू जन्म विवाह जीवन, मरन रिन धन धाम ये।
जिंहिकों जहां लिखि दियो प्रभु, तिहि को तुरत तिंहि ठाम ये।।

—पद्माकर

अनहोनी नहि होय, होय होनी है सोइय ।
रिजक मोति हरि हथ्य, डर भु मानव क्यों रोइय ।।

—जोधराज (हम्मीर रासो)

अनुक्रमणिका

ग्रंथकारों की नामावली